खण्ड - 'ग' (नाटक)

महाकविकालिदासविरचितम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(चतुर्थोऽङ्कः दशं श्लोकपर्यन्तः)

महाकवि कालिदास

➨ कालिदास का जीवन-परिचय एवं समय

नोट–कालिदास का जीवन-परिचय, रचनाएँ एवं समय पुस्तक के द्वितीय भाग 'रघुवंशमहाकाव्यम्' में देखें।

➨ कालिदास की नाट्य-कला

कालिदास प्रत्येक वस्तु का चित्र नेत्रों के सामने उपस्थित करने में सक्षम हैं। वे मानव हृदय की कोमल भावनाओं, उसकी उत्सुकता, विह्वलता और भावावेशों का अत्यन्त सुन्दर वर्णन करते हैं। उनका प्रकृति-वर्णन केवल मनोरञ्जन का साधन मात्र नहीं है, वह मनुष्य को शिक्षा भी प्रदान करता है। कालिदास ने चरित्र-चित्रण और वस्तुओं के सजीव वर्णन में कुशलता दिखायी है।

घटना-संयोजन– 'अभिज्ञानशाकुन्तल' में घटनाओं का संयोजन पूर्णरूप से स्वाभाविक है, साथ ही उसमें असाधारण सौष्ठव भी विद्यमान है। प्रत्येक घटना सार्थक है, अतः कथानक के विकास में पूरी तरह सहायक है। फलतः नाटक की गति स्वाभाविक और अविच्छिन्न है। जैसे– राजा का शकुन्तला से गान्धर्व-विवाह, दुर्वासा का शाप, दुष्यन्त का अपने नाम की अँगूठी देना, दुर्वासा द्वारा उसी अँगूठी को दिखाने पर शाप-मोचन आदि सभी घटनाएँ सुसम्बद्ध हैं।

घटनाओं की सार्थकता– 'अभिज्ञानशाकुन्तल' की प्रत्येक घटना सार्थक है और किसी विशेष उद्देश्य से रखी गयी है। जैसे–दुर्वासा के शाप से दुष्यन्त का शकुन्तला को भूलना, अँगूठी खोना, पुनः अँगूठी का मिलना, शकुन्तला-दुष्यन्त का मिलन, कण्व का शकुन्तला की विपत्ति दूर करने के लिए सोमतीर्थ जाना आदि।

रचना-कौशल– महाभारत के एक नीरस कथानक को कालिदास ने अपने रचना-कौशल से 'अभिज्ञानशाकुन्तल' नामक एक सरस सुविख्यात नाटक में परिवर्तित कर दिया है।

चरित्र-चित्रण—कालिदास चरित्र-चित्रण में सिद्धहस्त हैं। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के पात्र समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि हैं। उसके प्रत्येक पात्र का अपना विशिष्ट व्यक्तित्व है, जैसे– दुर्वासा अत्यन्त क्रोधी, शकुन्तला लज्जाशील, अनसूया शान्त व विवेकशील एवं प्रियंवदा हास्य-प्रिय है।

पात्रों के अनुकूल भाषा—कालिदास के प्रत्येक पात्र अपनी स्थिति के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग करते हैं। प्रियंवदा और अनसूया सखीजनोचित हास-परिहास करती हैं। कण्व पिता के समान शकुन्तला का अभिनन्दन करते हैं– **सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता।**

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में रस-निरूपण— शाकुन्तल शृङ्गार रस प्रधान नाटक है। इसमें सम्भोग शृङ्गार अङ्गी रस है और विप्रलम्भ शृङ्गार है। करुण, वीर, अद्‌भुत, हास्य, भयानक, वत्सल, शान्त ये अङ्ग रस हैं। यद्यपि शाकुन्तल में विप्रलम्भ शृङ्गार का विस्तार है तथापि नाटक सुखान्त है। अन्त में दुष्यन्त-शकुन्तला का मिलन है, अतः शाकुन्तलम् शृङ्गार प्रधान नाटक है।

कालिदास का काव्य-सौन्दर्य—शाकुन्तलम् में कालिदास ने कई ऐसे प्रसङ्ग उपस्थित किये हैं जो भावों की दृष्टि से अत्यन्त मार्मिक हैं। इनमें कालिदास की कल्पना-शक्ति व नाट्य-कुशलता का विशेष परिचय प्राप्त होता है। जैसे– चतुर्थ अङ्क में शकुन्तला की विदाई।

कालिदास का प्रकृति-प्रेम—कालिदास प्रकृति को सजीव और मानवीय भावनाओं से ओत-प्रोत मानते हैं। शकुन्तला वृक्षों को भाई और लताओं को बहन की तरह मानती है और उनकी सेवा करती है। इस प्रकृति-प्रेम से अभिभूत होकर शकुन्तला को पति-गृह जाने के समय वृक्ष और लताएँ वस्त्राभूषण तथा अन्य प्रसाधन उपहार आशीर्वादस्वरूप प्रदान करते हैं।

भाषा एवं शैली—कालिदास की लोकप्रियता का कारण उनकी सरल, परिष्कृत और प्रसाद गुण युक्त शैली है। कालिदास वैदर्भी रीति के कवि हैं और वैदर्भी की प्रमुख विशेषता है–मधुर शब्द, ललित रचना, समासों का सर्वथा अभाव या छोटे समासों का होना। इनकी रचनाओं में प्रसाद-माधुर्य गुणों का प्राधान्य है, ओज गुण कम मात्रा में मिलता है।

भाषा सरल, सरस व मनोरम है। उनका शब्दकोश अगाध है। इसी कारण भाषा में असाधारण मनोरमता व प्रवाह है। कालिदास की शैली संक्षिप्त और ध्वन्यात्मक है। वह सुन्दर भावों को सुन्दर भाषा में प्रकट करते हैं। कालिदास ने कथोपकथन में पात्रों के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया है।

अलङ्कार—कालिदास ने शाकुन्तलम् में प्रायः सभी प्रचलित अलङ्कारों का प्रयोग किया है। प्रमुख रूप से उपमा, उत्प्रेक्षा, स्वभावोक्ति, तुल्ययोगिता, समासोक्ति, व्यतिरेक, अर्थान्तरन्यास आदि। कालिदास अपनी उपमाओं के लिए विश्व-विख्यात हैं।

●●

चतुर्थ अङ्क का सारांश

फूल चुनती हुई प्रियंवदा और अनसूया के आपसी वार्त्तालाप से चतुर्थ अङ्क का प्रारम्भ होता है। अनसूया प्रियंवदा से कहती है कि राजा दुष्यन्त ने शकुन्तला से गान्धर्व विवाह कर लिया है, परन्तु मेरे हृदय में शान्ति नहीं है। आज ही वह राजर्षि यज्ञ की समाप्ति पर ऋषियों से विदा लेकर अपने नगर को चला जायगा। वहाँ जाकर इस शकुन्तला का स्मरण करेगा या नहीं? पर्णशाला में दुष्यन्त के ध्यान में मग्न शकुन्तला बैठी हुई थी। इसी बीच दुर्वासा ऋषि का अतिथि रूप में आश्रम में आगमन होता है। अतिथि-सत्कार प्राप्त न होने पर क्रुद्ध दुर्वासा शकुन्तला को शाप देते हैं कि जिसका स्मरण करती हुई तू मुझ–जैसे तपस्वी का आतिथ्य नहीं कर रही है, वह याद दिलाने पर भी तुझे स्मरण नहीं करेगा। प्रियंवदा के अनुनय-विनय से प्रसन्न होकर दुर्वासा शापमुक्त होने का उपाय बताते हैं कि यदि वह उसके पहचान का आभूषण दिखा देगी तो शाप समाप्त हो जायगा। अनसूया और प्रियंवदा शाप की बात न शकुन्तला को बताती हैं और न अन्य किसी भी व्यक्ति को, क्योंकि वे समझ रही थीं कि दुष्यन्त की नामाङ्कित अँगूठी शकुन्तला के पास है। वह उसे दिखला देगी तो शाप स्वतः समाप्त हो जायगा। शाप की बात बताने से सभी अकारण चिन्तित हो जायँगे।

सोमतीर्थ यात्रा से लौटे महर्षि कण्व को आकाशवाणी से ज्ञात हुआ कि शकुन्तला का गान्धर्व विवाह राजा दुष्यन्त के साथ हो गया है और वह गर्भिणी भी है। कण्व शकुन्तला के इस कृत्य का अभिनन्दन करते हैं। दुर्वासा के शाप के प्रभाव से शकुन्तला को बुलाने के लिए राजर्षि दुष्यन्त ने किसी भी व्यक्ति को नहीं भेजा। शकुन्तला को पतिगृह भेजने के लिए कण्व प्रबन्ध करते हैं। शकुन्तला की विदाई की तैयारी होती है। वनवृक्षों द्वारा शकुन्तला के लिए रेशमी वस्त्र, पैरों पर लगाने के लिए अलक्त (महावर) तथा विभिन्न अङ्गों में पहनने योग्य आभूषण प्रदान किये जाते हैं। उन्हें लेकर तापस कुमार नारद आता है और उन्हें गौतमी को देता है कि इनसे शकुन्तला को अलङ्कृत कीजिये। प्रियंवदा और अनसूया शकुन्तला को सुसज्जित करती हैं। इसी बीच में हस्तिनापुर जानेवाले ऋषि शार्ङ्गरव आदि बुलाये जाते हैं। ऋषि कण्व शकुन्तला की विदा के समय उसके वियोग में करुण रस से ओतप्रोत हो जाते हैं। शकुन्तला अपनी सखियों और सहचरी मृगियों आदि से विदा लेती है। महर्षि कण्व शकुन्तला को लेकर जा रहे ऋषिकुमारों के द्वारा राजा दुष्यन्त के लिए सन्देश भेजते हैं कि आप अपने उच्च कुल के अनुसार शकुन्तला की स्नेह प्रवृत्ति पर विचारकर अपनी अन्य पत्नियों के सदृश इससे व्यवहार करें। महर्षि कण्व सामान्य गृहस्थ पिता के समान पतिगृह जाती हुई पुत्री को व्यावहारिक उपदेश देते हैं कि पतिगृह पहुँचने पर सास-ससुर की सेवा, परिजनों के प्रति सहृदयता, पति के प्रति कभी भी विरुद्ध आचरण न करना, अहंकार न करना आदि कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए। कण्व से विदा लेते हुए शकुन्तला पूछती है कि मैं कब इस आश्रम का पुनः दर्शन करूँगी? कण्व आशीर्वाद देते हुए कहते हैं कि दुष्यन्त से उत्पन्न पुत्र को राज्यभार सौंपकर अपने पति के साथ इस आश्रम में शान्ति लाभ के लिए पुनः आओगी। तत्पश्चात् गौतमी और ऋषिकुमारों के साथ शकुन्तला पतिगृह के लिए प्रस्थान करती है। दोनों सखियाँ शकुन्तला से रहित सूने आश्रम में प्रवेश करती हैं। कण्व पुत्री को पति के घर भेजकर हार्दिक प्रसन्नता व सन्तोष का अनुभव करते हुए कहते हैं–

अर्थो हि कन्या परकीय एव तामद्य सम्प्रेष्य परिग्रहीतुः।
जातो ममायं विशदः प्रकामं प्रत्यर्पितन्यास इवान्तरात्मा॥

●●

प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

शकुन्तला का चरित्र-चित्रण

शकुन्तला अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका है। वह ऋषि कण्व की पालिता-पुत्री है। उसके वास्तविक जननी-जनक मेनका और विश्वामित्र हैं। शकुन्तला का चरित्र एक आदर्श भारतीय नारी का चरित्र है। उसके चरित्र में अनेक ऐसे गुण हैं, जो उसे नाटक का एक प्रभावशाली पात्र बनाने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

(1) अनुपम सुन्दरी—शकुन्तला अत्यन्त सुन्दर है। उसके प्राकृतिक सौन्दर्य को बाह्य शृङ्गार की आवश्यकता नहीं है–

''इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी।''

राजा दुष्यन्त उसके अलौकिक रूप-सौन्दर्य को देखकर उस पर मुग्ध हो जाते हैं और उसके सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते हैं–

''अधरः किसलयरागः कोमलविटपानुकारिणौ बाहू।
कुसुममिव लोभनीयं यौवनमङ्गेषु सन्नद्धम्॥''

(2) शालीनता—शकुन्तला में शालीनता कूट-कूटकर भरी है। वह सुशीला और लज्जाशीला है। राजा दुष्यन्त के सान्निध्य की आकाङ्क्षिणी होते हुए भी जब उसे ऐसा अवसर प्राप्त होता है, तो वह राजा से कहती है—

''मुञ्च तावन्मां भूयोऽपि सखीजनमनुमानयिष्ये।''

(3) पति-प्रेम—शकुन्तला अपने पति राजा दुष्यन्त से अत्यन्त प्रेम करती है, वह उनके वियोग में इतनी व्याकुल हो जाती है कि आश्रम में आये हुए ऋषि दुर्वासा का अतिथि-सत्कार नहीं करती है और उनके शाप की भागी बनती है–

''विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा, तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्, कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥''

(4) प्रकृति-प्रेम—शकुन्तला को पेड़-पौधों, लता-कुञ्जों, पशु-पक्षियों से विशेष अनुराग है। आश्रम से विदा होते समय वह आश्रम के वृक्षों, लताओं के साथ हरिणियों आदि से भी विदाई लेती है– **अवैमि ते तस्यां सोदर्यास्नेहम्।**

(5) पितृ-प्रेम—अपने पिता ऋषि कश्यप के लिए उसके हृदय में अत्यधिक प्रेम एवं श्रद्धा है। अतएव पतिगृह जाते समय वह अपने पिता से बार-बार मिलती है और कहती है–

''कथमिदानीं तातस्याङ्कात् परिभ्रष्टमलयतटोन्मूलिता चन्दनलतेव देशान्तरे जीवितं धारयिष्यामि।''

(6) सखी-प्रेम—शकुन्तला एक सच्ची सखी है। वह अपनी सखियों प्रियंवदा एवं अनुसूया से विशेष अनुराग रखती है। आश्रम से विदा के समय सखियों से विदा होने का उसे अपार दुःख होता है। वह ऐसा अनुभव करती है कि सखियों के बिना उसका शृङ्गार दुर्लभ हो जायगा–

''इदमपि बहु मन्तव्यम्। दुर्लभमिदानीं मे सखीमण्डनं भविष्यति॥''

निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि कालिदास को शकुन्तला के रूप में एक आदर्श भारतीय नारी के प्रेममयी रूप का चित्रण करने में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई है।

अनसूया का चरित्र-चित्रण

अनसूया शकुन्तला की प्राण-प्यारी सखी है। वह शकुन्तला से हार्दिक प्रेम करती है और उसे प्रसन्न रखने के लिए सतत प्रयत्नशील रहती है। अनसूया के व्यक्तित्व में हमें निम्न विशेषताएँ देखने को मिलती हैं–

(1) गम्भीर स्वभाव–अनसूया गम्भीर स्वभाव की है, उसमें प्रौढ़ता और परिपक्वता अधिक है। ऋषि दुर्वासा के शाप को सुनकर जब प्रियंवदा घबड़ा जाती है, तो अनसूया ही उसे ऋषि दुर्वासा को मनाकर शाप की समाप्ति का उपाय जानने के लिए प्रेरित करती है।

(2) स्वल्पभाषिणी–अनसूया कम बोलती है, हँसी-मजाक की बातों में उसकी विशेष रुचि नहीं है, वह अकेले में स्वयं से अधिक बातें करती है। पर्याप्त ऊहापोह करके ही वह किसी बात का उत्तर देती है।

(3) शङ्कालु प्रकृति–अनसूया शङ्कालु प्रकृति की है, वह सहसा किसी बात पर विश्वास नहीं करती है, दुष्यन्त और शकुन्तला के गान्धर्व विवाह को लेकर उसका मन आशङ्कित है। उसे इस बात की चिन्ता रहती है कि हस्तिनापुर जाकर दुष्यन्त, शकुन्तला को याद भी करेगा कि नहीं– **इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।**

(4) दूरदर्शिनी–अनसूया दूरदर्शिनी है। प्रियंवदा भयभीत है कि ऋषि कण्व शकुन्तला के गान्धर्व विवाह पर कैसी प्रतिक्रिया करेंगे, परन्तु अनसूया उसे आश्वस्त करती है कि ऋषि इसका अनुमोदन करेंगे।

(5) शकुन्तला की शुभचिन्तक–अनसूया शकुन्तला की हितैषिणी है। ऋषि दुर्वासा के शाप से वह बहुत दुःखी हो जाती है और प्रियंवदा से कहती है कि शाप का वृत्तान्त हम दोनों के बीच रहे। वह शकुन्तला की प्रसन्नता के लिए हर समय चिन्तित रहती है। शकुन्तला की विदाई के समय के लिए अनसूया न जाने कब से केसर की माला सँजोकर रखती है।

वस्तुतः कवि कालिदास ने अनसूया का चरित्र शकुन्तला की एक भावुक सखी के रूप में चित्रित किया है जिसके व्यक्तित्व में संवेदना, सहानुभूति, लज्जाशीलता, गम्भीरता एवं बुद्धिमत्ता आदि गुण समाहित हैं।

प्रियंवदा का चरित्र-चित्रण

प्रियंवदा नाटक की नायिका शकुन्तला की प्रिय सखी है। वह आयु में शकुन्तला के बराबर है और उसी के समान रूपवती है। वह शकुन्तला की हितैषिणी है और उसे सदैव प्रसन्न देखना चाहती है। उसके चरित्र की कुछ विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

(1) विनोदशीला–प्रियंवदा विनोदप्रिय स्वभाववाली है। शकुन्तला को केसर वृक्ष के पास खड़ा देखकर वह कहती है, तुम्हारे संयोग से यह वृक्ष ऐसा लग रहा है, जैसे लता का संयोग पा गया हो।

(2) आश्वस्त स्वभाव–प्रियंवदा आश्वस्त स्वभाववाली है। जब अनसूया का मन इस बात से आशङ्कित होता है कि हस्तिनापुर जाकर राजा दुष्यन्त शकुन्तला को याद करेंगे कि नहीं, तब प्रियंवदा उसे आश्वस्त करते हुए कहती है–**''न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति।''**

(3) वाक्चातुर्य–शकुन्तला को ऋषि दुर्वासा के शाप से मुक्त कराने हेतु वह अपने वाक्चातुर्य से ऋषि दुर्वासा को प्रसन्न करती है और उनसे शाप की समाप्ति का उपाय ज्ञात करती है–

अभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति।

(4) शकुन्तला की हितैषिणी–प्रियंवदा शकुन्तला से निःस्वार्थ प्रेम करती है और उसे बहन के समान मानती है। वह शकुन्तला के प्रत्येक मनोरथ को पूर्ण करने के लिए प्रयत्नशील रहती है। ऋषि दुर्वासा से शाप की समाप्ति का उपाय

वही ज्ञात करती है। शकुन्तला की विदाई के समय वह सहर्ष गोरोचन, तीर्थमृत्तिका, दूर्वाकिसलय आदि माङ्गलिक अङ्गराग एकत्र करती है और उसे राजा की दी हुई अँगूठी सँभालकर रखने की सलाह देती है—

यदि नाम स राजा प्रत्यभिज्ञानमन्थरो भवेत्, ततस्तस्य
इदमात्मनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं दर्शय।

संक्षेप में प्रियंवदा शकुन्तला की परम स्निग्ध सखी है, जो उसके सुख में सुखी और दुःख में दुःखी रहती है। वह व्यावहारिक शिष्टाचार, नम्रता एवं वाक्पटुता में कुशल है।

कण्व (काश्यप) का चरित्र-चित्रण

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में ऋषि कण्व आश्रम के पूज्य कुलपति हैं। उनका दूसरा नाम ऋषि काश्यप भी है। उन्होंने नाटक की नायिका शकुन्तला का पितृ-रूप में लालन-पालन किया था। वे कालदर्शी ऋषि और वात्सल्य से परिपूर्ण पिता हैं। उनके चरित्र का अध्ययन निम्न रूपों में किया जा सकता है–

(1) पुत्री-प्रेम–शकुन्तला ऋषि कण्व की पालिता पुत्री थी, परन्तु उसके लिए उनका पितृ-हृदय स्नेह से कूट-कूटकर भरा था। शकुन्तला की विदाई का विचार आते ही उनका हृदय उत्कण्ठायुक्त हो उठता है, गला रुँध जाता है और दृष्टि चिन्ता से जड़ हो जाती है–

''यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया,
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।''

वह स्वयं से पूछते हैं कि मेरा दुःख कैसे दूर हो सकता है–

''शममेष्यति मम शोकः कथं नु वत्से त्वया रचितपूर्वम्।
उटजद्वारविरूढं नीवारबलिं विलोकयतः॥''

(2) कठोर तपस्वी–ऋषि कण्व का तपोबल अनुपम है, उनका शरीर तपस्या के कारण दुर्बल हो चुका है। शकुन्तला की विदाई के समय अत्यन्त शोकाकुल होते हुए भी उन्हें अपने तपोऽनुष्ठान का ध्यान रहता है और वे उसके अन्तराल को सहन न कर पाने के कारण शकुन्तला से शीघ्र जाने को कहते हैं–

''वत्से, उपरुध्यते तपोऽनुष्ठानम्।''

(3) सिद्ध पुरुष–ऋषि कण्व सिद्ध पुरुष थे, उन्हें भूत-भविष्य सभी का ज्ञान था। तभी तो यज्ञ के समय आकाशवाणी द्वारा ही उन्हें शकुन्तला के गर्भवती होने की सूचना मिलती है। उनके प्रभाव के कारण ही शकुन्तला की विदाई के समय वृक्ष-वन देवता उसे वस्त्राभूषण आदि प्रसाधन सामग्री प्रदान करते हैं।

(4) लोक-व्यवहार में पारङ्गत–यद्यपि वे ऋषि हैं तथापि लौकिक व्यवहार को भली-भाँति जानते हैं। विदाई के समय शकुन्तला को दिया गया उनका गृहस्थाश्रम-सम्बन्धी उपदेश स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य है। वे शकुन्तला से कहते हैं–

शुश्रूषस्व गुरून् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने
भर्तुर्विप्रकृताऽपि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गमः।
भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी
यान्तेवं गृहिणीपदं युवतयो वामाः कुलस्याधयः॥

(5) उदात्त व्यक्तित्व–ऋषि कण्व दुष्यन्त के साथ सम्पन्न शकुन्तला के गान्धर्व विवाह के औचित्य को जिस सहजता से स्वीकार करते हैं, वह उनके उदात्त व्यक्तित्व का द्योतक है।

वस्तुतः कण्व का जीवन गङ्गा के प्रवाह की भाँति पावन, हिम की भाँति उज्ज्वल, सागर की भाँति विस्तृत और त्रिवेणी की तरह सरल और स्निग्ध है।

दुष्यन्त का चरित्र-चित्रण

महाराजा दुष्यन्त हस्तिनापुर के राजा हैं। वह सुन्दर, हृष्ट-पुष्ट और युवा हैं। उनके सौन्दर्य को देखकर शकुन्तला प्रथम बार में ही आकृष्ट हो जाती है। उनके चरित्र की निम्न प्रमुख विशेषताएँ हैं–

(1) बुद्धिमान्–दुष्यन्त के चरित्र में बुद्धिमत्ता को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। वह शकुन्तला के रूप से आकृष्ट होने के बाद विवाह करने की तभी सोचता है, जब उसे यह पता चल जाता है कि वह ब्राह्मण की कन्या नहीं है।

(2) मातृभक्त–द्वितीय अङ्क में जब करभक उसकी माता का सन्देश देकर आता है कि "आज से चौथे दिन मेरे उपवास की पारणा होगी। उस समय तुम यहाँ अवश्य उपस्थित रहना" तो वह विवेक से तपस्वियों का भी उल्लंघन नहीं करना चाहता और माता की आज्ञा का पालन भी करना चाहता है।

(3) कलामर्मज्ञ–संगीत और चित्रकला के साथ-साथ दुष्यन्त युद्धकला में भी निपुण है। पञ्चम अङ्क में हंसपदिका की गीति पर उसकी 'अहो, रागपरिवाहिणी गीतिः' यह टिप्पणी उसकी संगीतज्ञता की द्योतक है। वह शकुन्तला का चित्र बनाकर अपनी चित्रकला-पारङ्गतता की सिद्धि करता है। उसकी युद्धकला का पता तब चलता है, जब इन्द्र उसे दानवों से युद्ध करने के लिए स्वर्ग बुलाते हैं।

(4) सहृदय–दुष्यन्त ऋषि-मुनियों का सच्चे मन से सम्मान करनेवाला है। वह आश्रम के मृगों एवं पशु-पक्षियों पर शर-सन्धान नहीं करता है, आश्रम में विनम्र भाव से प्रवेश करता है और आश्रम में किसी प्रकार की विघ्न-बाधा नहीं डालता।

(5) कुशल शासक–वह सफल शासक है, प्रजापालक है, कर्त्तव्यनिष्ठ है, शूरवीर तथा पराक्रमशील है। वह आश्रम में बाधा उपस्थित करनेवालों से आश्रम की सुरक्षा करता है।

(6) सच्चा प्रेमी–राजा दुष्यन्त एक आदर्श प्रेमी हैं। प्रेम के क्षेत्र में उसका नाम आज भी अमर है। ऋषि शाप से मुक्त होने पर वह अपने परिचय, प्रणय एवं गन्धर्व-विवाह, शकुन्तला एवं उसकी सन्तति सबकी रक्षा करता है तथा अपने वचन का पालन करने का पूरा प्रयास करता है।

(7) नायक–राजा दुष्यन्त अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक का नायक है। उसमें नायकत्व सम्बन्धी सभी विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं। उसका व्यक्तित्व भी प्रभावशाली है।

महर्षि दुर्वासा का चरित्र-चित्रण

अभिज्ञानशाकुन्तलम् में महाकवि कालिदास ने जिन तीन महर्षियों को पात्र के रूप में लिया है, वे हैं—कण्व, दुर्वासा और मारीच। महर्षि दुर्वासा का उपयोग उन्होंने शकुन्तला को शाप देने और फिर शापमुक्त होने का उपाय बताने में किया है। उनके चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) क्रोधी– दुर्वासा बहुत क्रोधी हैं। प्रियंवदा उन्हें लौटाकर आश्रम में लाना चाहती है, किन्तु वे नहीं आते। प्रियंवदा उन्हें 'प्रकृतिवक्र' कहती है, वे किसी के अनुनय-विनय पर ध्यान नहीं देते–'प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति।' प्रियंवदा के शब्दों में वे सुलभकोप महर्षि हैं–'एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः।' उनके व्यक्तित्व में कोप अग्नि की तरह है–'कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति।' वह जैसे शाप देने के अभ्यस्त हैं। वे इस बात की चिन्ता नहीं करते हैं कि मैं किसे शाप दे रहा हूँ। उन्होंने शकुन्तला को ऐसा कठोर शाप दिया है जिसकी काट उनके ही पास है।

(2) अतिथि– कण्व के अतिथि के रूप में दुर्वासा की उपस्थिति हुई है। उनके 'अयमहं भोः।' वाक्य को अनसूया अतिथि की आवाज के रूप में ही लेती है। – 'सखि! अतिथीनामिव निवेदितम्।' वे अपनी उपेक्षा से शकुन्तला को अतिथि का तिरस्कार करनेवाली ही समझते हैं–'आः, अतिथिपरिभाविनि।' क्योंकि वे अतिथि हैं, अतः पूजा के लिए अर्ह हैं।

(3) अहङ्कारी – दुर्वासा के व्यक्तित्व में अहंकार साफ झलकता है। वे आश्रम में आते ही जिस स्वर में 'अयमहं भोः' कहते हैं, उससे लगता है कि वे अपेक्षा रखते हैं कि इतना कह देने से ही लोग उन्हें पहचान लेंगे। अपने अहंकार की रक्षा के लिए वे शीघ्र क्रोधित हो जाते हैं।

गौतमी का चरित्र-चित्रण

गौतमी अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक की महत्त्वपूर्ण पात्र है। उसके चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(1) वात्सल्यमयी– गौतमी में वात्सल्य और भावुकता का स्पष्ट रूप दिखायी देता है। जब शारद्वत आदि उसे आगे कर आश्रम के लिए प्रस्थान करते हैं, तब राजदरबार में शकुन्तला पर उसे तरस आती है और वह शार्ङ्गरव से कहती है– ''वत्स शार्ङ्गरव, देखो, रोती हुई शकुन्तला हमारे पीछे-पीछे आ रही है। पति के कठोर हो जाने पर यह करे भी तो क्या करे?''

(2) सामाजिक परम्पराओं की जानकार– गौतमी शब्दशास्त्र की जानकार तो है ही, लोकव्यवहार और शिष्टाचार भी खूब जानती है। जब वनदेवियाँ शकुन्तला के लिए मङ्गलकामना करती हैं, तब वही शकुन्तला को इन्हें प्रणाम करने का निर्देश करती है–''जाते, ज्ञातिजनस्निग्धाभिरनुज्ञातगमनाऽसि तपोवनदेवताभिः। प्रणम भगवतीः।'' पाँचवें अङ्क में गौतमी दुष्यन्त को समझाती है कि शकुन्तला का विवाह तुम्हारी सहमति से ही हुआ है। जब राजा दुष्यन्त यह पूछता है क्या मेरा इनसे अर्थात् शकुन्तला से विवाह हुआ है? तब गौतमी ही शकुन्तला का घूँघट हटाकर उसे राजा को दिखाती है, ताकि वह उसे स्वयं देख ले।

(3) सहृदया– गौतमी शकुन्तला की शुभचिन्तक मानी जाती है। शिष्य उसी के हाथों शान्त्युदक भिजवाता है। वही ज्वरग्रस्त शकुन्तला पर दर्भोदक का प्रयोग कर उसे विश्वास दिलाती है कि इससे तुम ठीक हो जाओगी। वह कण्व की आदेशपालिका भी है। कण्व उसे पुकारकर ही कहते हैं कि शकुन्तला को पतिगृह ले जाने के लिए शार्ङ्गरव आदि को आदेश दो।

(4) जिज्ञासु– शकुन्तला की विदाई के समय आशीर्वाद देती तापसियों के साथ वह भी उपस्थित है। उनके चले जाने के पश्चात् गौतम और नारद दो ऋषिकुमार अलङ्कार लेकर उपस्थित होते हैं, जिन्हें देखकर सबके साथ गौतमी भी आश्चर्यचकित हो जाती है और दो प्रश्न करके अपनी जिज्ञासा व्यक्त करती है–'वत्स नारद, कुत एतत्।' 'किं मानसी सिद्धिः।'

●●

महाकविकालिदासविरचितम्

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

चतुर्थोऽङ्कः

(ततः प्रविशतः कुसुमावचयं नाट्यन्त्यौ सख्यौ।)

अनसूया – हला प्रियंवदे, यद्यपि गान्धर्वेण विधिना निर्वृत्तकल्याणा शकुन्तलाऽनुरूपभर्तृगामिनी संवृत्तेति निर्वृत्तं मे हृदयम्, तथाप्येतावच्चिन्तनीयम्।

प्रियंवदा - कथमिव।

अनसूया - अद्य स राजर्षिरिष्टिं परिसमाप्यर्षिभिर्विसर्जित आत्मनो नगरं प्रविश्यान्तःपुरसमागत इतोगतं वृत्तान्तं स्मरति वा न वेति।

प्रियंवदा - विस्रब्धा भव। न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति। तात इदानीमिमं वृत्तान्तं श्रुत्वा न जाने किं प्रतिपत्स्यत इति।

अनसूया - यथाऽहं पश्यामि, तथा तस्यानुमतं भवेत्।

प्रियंवदा - कथमिव?

अनसूया - गुणवते कन्यका प्रतिपादनीयेत्ययं तावत् प्रथमः सङ्कल्पः। तं यदि दैवमेव सम्पादयति नन्वप्रयासेन कृतार्थो गुरुजनः।

प्रियंवदा - (पुष्पभाजनं विलोक्य) सखि, अवचितानि बलिकर्मपर्याप्तानि कुसुमानि।

अनसूया - ननु सख्याः शकुन्तलायाः सौभाग्यदेवताऽर्चनीया।

प्रियंवदा - युज्यते।

(इति तदेव कर्माभिनयतः।)

(तदनन्तर पुष्प तोड़ने का अभिनय करती हुई दोनों सखियाँ प्रवेश करती हैं।)

अनसूया - सखि प्रियंवदा, यद्यपि गान्धर्व विधि से जिसका विवाहरूपी मङ्गल कार्य सम्पन्न हो गया है, ऐसी शकुन्तला अपने योग्य पति को प्राप्त हो गयी है, अतः मेरा हृदय सुखी है, फिर भी इतनी बात सोचने की है।

प्रियंवदा - कौन-सी?

अनसूया - आज वह राजर्षि यज्ञ को समाप्त करके (अर्थात् यज्ञ की समाप्ति पर) ऋषियों के द्वारा विदा होकर, अपने नगर में प्रवेश करके अन्तःपुर की स्त्रियों से मिलकर, यहाँ के वृत्तान्त को याद करेगा अथवा नहीं?

प्रियंवदा - निश्चिन्त रहो। उस तरह की मनोहर आकृतियोंवाले पुरुष गुणविहीन नहीं हुआ करते। (किन्तु) पिता (कण्व) इस समाचार को सुनकर पता नहीं क्या करेंगे?

अनसूया - जहाँ तक मैं सोचती हूँ, यह उन्हें अभीष्ट ही होगा।

प्रियंवदा - कैसे?

अनसूया - गुणशाली व्यक्ति को कन्या देनी चाहिए, यह तो (माँ-बाप की) प्रथम अभिलाषा होती है। उसे यदि भाग्य ही सम्पन्न कर देता है, तब तो गुरुजन बिना प्रयास के ही कृतार्थ हो गये।

प्रियंवदा - (फूलों की टोकरी को देखकर) सखि, पूजा-कार्य के लिए पर्याप्त फूल तोड़ लिये गये।

अनसूया - अरे, सखी शकुन्तला के विवाह-देवता की भी पूजा होनी चाहिए।

प्रियंवदा - ठीक है।

(ऐसा कहकर उसी कार्य का अभिनय करती हैं।)

शब्दार्थ - कुसुमावचयम् - पुष्प तोड़ने का, **निर्वृत्तकल्याणा -** जिसका विवाहरूपी मङ्गलकार्य सम्पन्न हो गया है ऐसी, **अनुरूपभर्तृगामिनी -** अपने योग्य पति से संगत, **संवृत्ता -** हो गयी है, **निर्वृत्तम् -** सुखी, प्रसन्न, **चिन्तनीयम् -** सोचने की है, **इष्टिम् -** यज्ञ को, **परिसमाप्य -** समाप्त करके, **अन्तःपुरसमागतः -** अन्तःपुर की स्त्रियों से मिलकर, **इतोगतम् -** यहाँ के, **विस्रब्धा** - निश्चिन्त, **गुणविरोधिनः -** गुणविहीन, **पश्यामि -** समझती हूँ, **अनुमतम् -** अभीष्ट, स्वीकृति, **गुणवते-** गुणवान्, **प्रतिपादनीया -** देना चाहिए, **सङ्कल्पः -** अभिलाषा, **दैवम् -** भाग्य, **कृतार्थः -** कृतकार्य, **गुरुजनः -** बड़े लोग, **पुष्पभाजनम् -** फूलों की टोकरी, **अवचितानि -** तोड़ लिये गये, **बलिकर्मपर्याप्तानि -** पूजा कार्य के लिए पर्याप्त, **सौभाग्य देवता -** विवाह के देवता, पूजने चाहिए।

विशेष– राजर्षिः .... ऋषिभिर्विसर्जितः - ऋषियों का यज्ञ निर्विघ्न समाप्त करवाकर, उनसे विदा लेकर राजा दुष्यन्त अपनी राजधानी को लौट गया है। उसके चले जाने के बाद अनसूया वितर्क कर रही है–''यहाँ से लौटकर राजा अब अपनी रानियों के साथ आनन्द का उपभोग करने में मग्न हो जायगा, तब वह शकुन्तला को और उसे दिये अपने वचन को याद करेगा अथवा नहीं?''

आकृतिविशेषा - यह लोकमान्यता है कि 'जिसका स्वरूप सुन्दर होता है, वह अवश्य ही गुणी होता है।' दुष्यन्त का रूप सुन्दर है, अतः वह अवश्य ही सद्गुणों से विभूषित होगा। इसलिए जैसा उसने कहा है, वैसा अवश्य करेगा।

तस्यानुमतं - अनसूया के कहने का अभिप्राय है कि ''प्रत्येक लड़की का पिता यह सोचता है कि मेरी कन्या योग्य वर के साथ ब्याही जाय। शकुन्तला ने अपना विवाह चक्रवर्ती सम्राट् से किया है। निश्चय ही पिता कण्व इस कार्य का समर्थन ही करेंगे।

सौभाग्यदेवता- विवाह के अनन्तर कुछ देवी-देवता पूजे जाते हैं। इन्हें सौभाग्य-देवता कहा जाता है। यद्यपि शकुन्तला का गान्धर्व विवाह था, फिर भी उसकी सखियाँ इस माङ्गलिक कृत्य को सम्पन्न कर रही हैं।

(नेपथ्ये)

अयमहं भोः।

अनसूया - (कर्णं दत्त्वा) सखि, अतिथीनामिव निवेदितम्।

प्रियंवदा - ननूटजसन्निहिता शकुन्तला।

अनसूया - अद्य पुनर्हृदयेनासन्निहिता। अलमेतावद्भिः कुसुमैः। (इति प्रस्थिते)

(पर्दे के पीछे)

अरे, यह मैं (आ गया) हूँ।

अनसूया - (कान लगाकर) सखि, पूज्य अतिथि की-सी आवाज है।

प्रियंवदा - शकुन्तला तो कुटी में स्थित ही है।

अनसूया - किन्तु आज वह हृदय से अनुपस्थित है (अर्थात् आज उसका मन कहीं और लगा है।) तो बस, इतना ही फूल पर्याप्त है (ऐसा कहकर दोनों जाने लगीं)।

शब्दार्थ - कर्णं दत्त्वा - कान लगाकर। **अतिथीनाम्** - पूज्य अतिथि की। **उटजसन्निहिता** - कुटी में उपस्थित। **असन्निहिता** - अनुपस्थित।

विशेष - हृदयेनासन्निहिता - कुछ काल तक शकुन्तला के साथ रहकर, विहारकर, दुष्यन्त अपनी राजधानी को वापस चला गया है। उसके बिना शकुन्तला को कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। उसकी इन्द्रियाँ आज सही-

सही काम नहीं कर रही हैं। उसका हृदय एकमात्र दुष्यन्त का चिन्तन कर रहा है। यही कारण है कि अनसूया उसे हृदय से अनुपस्थित बता रही है।

(नेपथ्ये)

आः, अतिथिपरिभाविनि,
विचिन्तयन्ती यमनन्यमानसा
तपोधनं वेत्सि न मामुपस्थितम्।
स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन्
कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव॥1॥

(पर्दे के पीछे)

ओह, अतिथि का तिरस्कार करनेवाली,

अनन्यहृदयवाली (तुम) जिसको सोचती हुई आये हुए मुझ तपस्वी को नहीं देख रही हो, वह उन्मत्त पहले की गयी बात की तरह, याद दिलाने पर भी तुझे नहीं स्मरण करेगा।।1।।

अन्वयः–अनन्यमानसा, (त्वम्), यम्, विचिन्तयन्ती, उपस्थितम्, माम्, तपोधनम्, न, वेत्सि, सः, प्रमत्तः, प्रथमम्, कृताम्, कथाम्, इव, बोधितः सन्, अपि, त्वाम्, न, स्मरिष्यति।।1।।

शब्दार्थ– अनन्यमानसा- अनन्यहृदयवाली, (**त्वम्** - तुम), **यम्** - जिसको, **विचिन्तयन्ती** - सोचती हुई, **उपस्थितम्** - आये हुए, **माम्** - मुझ, **तपोधनम्** - तपस्वी को, **न** - नहीं, **वेत्सि** - देख रही हो, **सः** - वह, **प्रमत्तः** - उन्मत्त। **प्रथमम्** - पहले, **कृताम्** - की गयी, **कथाम्** - बात की, **इव** - तरह, **बोधितः सन्** - याद दिलाने पर, **अपि** - भी, **त्वाम्** - तुझे, **न** - नहीं, **स्मरिष्यति** - याद करेगा।।1।।

विशेष - प्रमत्तः - शराबी व्यक्ति किसी से कोई बात करता है और कुछ क्षणों के बाद ही उसे भूल जाता है। वह बात उसे याद नहीं रहती। यदि कोई उस बात को याद भी दिलाता है, तो वह उसे स्मरण नहीं कर पाता। इसी प्रकार दुष्यन्त न तो स्वयं तुझे पहचानेगा और न याद दिलाने पर ही याद करेगा।

इस श्लोक में काव्यलिङ्ग और उपमा अलङ्कार तथा वंशस्थ छन्द है।

प्रियंवदा - हा धिक्, हा धिक्। अप्रियमेव संवृत्तम्। कस्मिन्नपि पूजार्हेऽपराद्धा शून्यहृदया शकुन्तला।(पुरोऽवलोक्य) न खलु यस्मिन् कस्मिन्नपि। एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः। तथा शप्त्वा वेगबलोत्फुल्लया दुर्वारया गत्या प्रतिनिवृत्तः।

अनसूया - कोऽन्यो हुतवहाद् दग्धुं प्रभवति। गच्छ। पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं यावदहमर्घोदकमुपकल्पयामि।

प्रियंवदा - तथा। (इति निष्क्रान्ता।)

अनसूया - (पदान्तरे स्खलितं निरूप्य) अहो, आवेगस्खलितया गत्या प्रभ्रष्टं ममाग्रहस्तात् पुष्पभाजनम्। (इति पुष्पोच्चयं रूपयति।)

(प्रविश्य)

प्रियंवदा - सखि, प्रकृतिवक्रः स कस्यानुनयं प्रतिगृह्णाति। किमपि पुनः सानुक्रोशः कृतः।

प्रियंवदा - हाय धिक्कार है, हाय धिक्कार है! अनर्थ ही हुआ। शून्यहृदया शकुन्तला ने किसी पूजनीय व्यक्ति के प्रति अपराध कर दिया है। (सामने देखकर) अरे! जिस किसी (साधारण) व्यक्ति के प्रति ही नहीं (अपराध कर दिया है), यह शीघ्र क्रुद्ध हो जानेवाले महर्षि दुर्वासा हैं। इस प्रकार (शकुन्तला को) शाप देकर अति तीव्र एवं दुर्निवार्य गति से लौट गये।

अनसूया - अग्नि के अलावा और कौन जलाने में समर्थ हो सकता है? जाओ, पैरों पर पड़कर इन्हें लौटा लाओ, जब तक मैं अर्घ और जल (पूजन-सामग्री) तैयार करती हूँ।

प्रियंवदा - ठीक है। (ऐसा कहकर निकल गयी।)

अनसूया - (कुछ चलने पर ठोकर खाकर गिरने का अभिनय करके) ओह, घबराहट से लड़खड़ाती हुई चाल के कारण मेरे हाथ से फूलों की डलिया गिर गयी। (ऐसा कहकर फूलों को बटोरने का अभिनय करती है।)

(प्रवेश करके)

प्रियंवदा - सखि, स्वभाव से ही टेढ़े वह (दुर्वासा) (भला) किसकी प्रार्थना स्वीकार करते हैं? फिर भी कुछ दयालु बना लिये गये हैं।

शब्दार्थ - संवृत्तम् - घटित हुआ, **पूजार्हे** - पूजा के योग्य, **अपराद्धा** - अपराध कर दिया है, **शून्यहृदया** - शून्यहृदय, **सुलभकोपः** - शीघ्र क्रुद्ध हो जानेवाले, **शप्त्वा** - शाप देकर, **वेगबलोत्फुल्लया** - अतितीव्र, **प्रतिनिवृत्तः** - लौटे जा रहे हैं, **हुतवहात् अन्यः** - अग्नि के अलावा, **प्रभवति** - समर्थ हो सकता है। **अर्घोदकम्** - अर्घ और जल, **उपकल्पयामि** - तैयार करती हूँ, **स्खलितम्** - ठोकर खाकर गिरने का, **अभिनीय** - अभिनय करके, **आवेगस्खलितया** - घबराहट से लड़खड़ाती हुई, **गत्या** - चाल के कारण, **पुष्पभाजनम्** - फूलों की डलिया, **पुष्पोच्चयम्** - फूलों को बटोरने का, **रूपयति** - अभिनय करती है, **प्रकृतिवक्रः** - स्वभाव से ही टेढ़े, **अनुनयम्** - प्रार्थना को, **प्रतिगृह्णाति** - स्वीकार करते हैं, **सानुक्रोशः** - दयार्द्र हृदय।

विशेष - **शून्यहृदया** - शकुन्तला का हृदय दुष्यन्त के चले जाने से विरह-विह्वल है। वह एकमात्र दुष्यन्त के ही विषय में सोच रही है। आस-पास क्या हो रहा है? यह सब उसे कुछ भी ज्ञात नहीं है।

दुर्वासा - महर्षि अत्रि और अनसूया के पुत्र थे। पुराणों में उन्हें अतिक्रोधी के रूप में वर्णित किया गया है।

कोऽन्यो दग्धुम् - भाव यह है कि क्रोधी तपस्वी दुर्वासा जैसा ऋषि ही कण्वपुत्री शकुन्तला को शाप देकर दण्डित कर सकता है, कोई साधारण व्यक्ति नहीं।

अर्घोदकम् - अर्घ और जल। अर्घ - पूजा-सामग्री। इसमें आठ वस्तुएँ रहती हैं– 'आपः क्षीरं कुशाग्रश्च दधि सर्पिः सतण्डुलम्। यवः सिद्धार्थकश्चैवाष्टाङ्गोऽर्घः प्रकीर्तितः।

प्रभ्रष्टम् - हाथ से फूलों की डलिया का गिरना अपशकुन है। इससे यह सूचित होता है कि क्रुद्ध दुर्वासा वापस नहीं लौटेंगे।

अनसूया - (सस्मितम्) तस्मिन् बह्वेतदपि। कथय।

प्रियंवदा - यदा निवर्तितुं नेच्छति तदा विज्ञापितो मया। भगवन्, प्रथम इति प्रेक्ष्याविज्ञाततपःप्रभावस्य दुहितृजनस्य भगवतैकोऽपराधो मर्षयितव्य इति।

अनसूया - ततस्ततः।

प्रियंवदा - ततो न मे वचनमन्यथाभवितुमर्हति, किं त्वभिज्ञानाभरणदर्शनेन शापो निवर्तिष्यत इति मन्त्रयमाण एवान्तर्हितः।

अनसूया - शक्यमिदानीमाश्वसितुम्। अस्ति तेन राजर्षिणा संप्रस्थितेन स्वनामधेयाङ्कितमङ्गुलीयकं स्मरणीयमिति स्वयं पिनद्धम्। तस्मिन् स्वाधीनोपाया शकुन्तला भविष्यति।

अनसूया - (मुस्कराकर) उनके विषय में इतना भी बहुत है। (तो) बतलाओ (आगे क्या हुआ)?

प्रियंवदा - जब वे लौटने के लिए राजी न हुए तब मैंने उनसे प्रार्थना की। भगवन्, (आपके) तप के प्रभाव को न जाननेवाली पुत्री (शकुन्तला) का यह पहला अपराध है, यह जानकर आपके द्वारा उसका यह एक अपराध क्षमा किया जाना चाहिए।

अनसूया - उसके बाद, उसके बाद?

प्रियंवदा - उसके बाद 'मेरा वचन बदल नहीं सकता, किन्तु पहचान के आभूषण के दिखलाने से शाप समाप्त हो जायगा' – यह कहते हुए ही वे अदृश्य हो गये।

अनसूया - अब धैर्य रखा जा सकता है। प्रस्थान करते हुए स्वयं उस राजर्षि (दुष्यन्त) के द्वारा अपने नाम से अङ्कित अँगूठी स्मृति-चिह्न के रूप में पहनायी गयी है। उससे शकुन्तला (शाप छुड़ाने के) उपाय में स्वतन्त्र होगी।

शब्दार्थ - निवर्तितुम् - लौटने के लिए, **प्रेक्ष्य** - समझकर, **अविज्ञाततपःप्रभावस्य** - तपस्या के प्रभाव को न जाननेवाली, **दुहितृजनस्य** - पुत्री का, **मर्षयितव्यः** - क्षमा करने के योग्य है, **अन्यथा** - दूसरा, **अभिज्ञानाभरणदर्शनेन** - पहचान का आभूषण दिखलाने से, **मन्त्रयमाणः** - कहते हुए ही, **अन्तर्हितः** - अदृश्य हो गये, **स्वनामधेयाङ्कितम्** - अपने नाम से अङ्कित, **अङ्गुलीयकम्** - अँगूठी, **स्मरणीयम्** - स्मृतिचिह्न, **पिनद्धम्** - पहनायी गयी, **स्वाधीनोपाया** - स्वतन्त्र।

विशेष - अभिज्ञानाभरणदर्शनेन - सदा ही प्रेमी युगल बिछुड़ते हैं तो निशानी के रूप में एक-दूसरे को कुछ-न-कुछ दे देते हैं। इस तरह की निशानी प्रायः अँगूठी, गले की माला आदि ही हुआ करती है। यह साधारण और सर्वप्रचलित बात है। शाप से छूटने के लिए दुर्वासा यही उपाय बतला रहे हैं।

स्वाधीनोपाया - भाव यह है कि यदि दुष्यन्त शकुन्तला को पहचानने में देर करे या न पहचाने तो शकुन्तला इस अँगूठी को दिखलाकर उसे स्मरण करा सकती है। ऐसा करने में शकुन्तला समर्थ तथा स्वतन्त्र रहेगी।

प्रियंवदा - सखि, एहि। देवकार्यं तावद् निर्वर्तयावः। (इति परिक्रामतः।)

प्रियंवदा - (विलोक्य) अनसूये, पश्य तावत्। वामहस्तोपहितवदनाऽऽलिखितेव प्रियसखी। भर्तृगतया चिन्तयात्मानमपि नैषा विभावयति। किं पुनरागन्तुकम्।

अनसूया - प्रियंवदे, द्वयोरेव नौ मुख एष वृत्तान्तस्तिष्ठतु। रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी।

प्रियंवदा - को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति।

(इत्युभे निष्क्रान्ते।)

विष्कम्भकः।

प्रियंवदा - सखि, आओ। इस समय देवकार्य (अर्थात् देव-पूजा) पूरा करें। (ऐसा कहकर दोनों घूमती हैं।)

प्रियंवदा - (देखकर) अनसूया, देखो तो। बायें हाथ पर मुँह रखे हुए प्रियसखी (शकुन्तला) चित्रित-सी (बैठी) है। पति में लगी चिन्ता के कारण यह अपने-आपको भी भूल गयी है, फिर अतिथि के विषय में क्या कहना?

अनसूया - प्रियंवदा, यह वृत्तान्त हम दोनों तक ही सीमित रहे। निश्चय ही, स्वभाव से ही सुकुमार प्रियसखी (शकुन्तला) रक्षा करने के योग्य है।

प्रियंवदा - भला कौन व्यक्ति गरम जल से नवमालिका को सींचेगा (इस प्रकार बात-चीत करके दोनों निकल गयीं।)

।विष्कम्भक समाप्त।

शब्दार्थ - निर्वर्तयावः - निभायें, पूरा करें, **वामहस्तोपहितवदना** - बायें हाथ पर मुँह रखे हुए, **आलिखिता** - चित्रित, **विभावयति** - पहचान रही है, **आगन्तुकम्** - अतिथि को, **रक्षितव्या** - रक्षा करने के योग्य, रक्षणीय है, **प्रकृतिपेलवा** - स्वभाव से ही सुकुमार, **उष्णोदकेन** - गरम जल से, **विष्कम्भकः** - प्रवेशक।

रक्षितव्या - अनसूया के कहने का भाव यह है कि दुर्वासा के शाप की बात हम दोनों के अलावा कोई तीसरा व्यक्ति न जानने पाये। यदि यह समाचार कर्णपरम्परा से शकुन्तला तक पहुँचा तो अनर्थ ही हो जायगा। सुनते ही वह प्राणों को छोड़ सकती है, क्योंकि वह अत्यन्त सुकुमार है। इसलिए रक्षितव्या कहा है।

उष्णोदकेन - नवमालिका अत्यन्त सुकोमल लता होती है। अति सावधानी से पालन करने पर ही बढ़ती है। यदि उसकी जड़ में गरम जल डाला जाय, तो वह कुछ ही घण्टों में सूखकर विनष्ट हो जायगी। शकुन्तला को दुर्वासा के शाप की बात बताना नवमालिका को गरम जल से सींचना है।

विष्कम्भक - नाटकों के अङ्कों के मध्य में मध्यरंग का दृश्य, जो दो मध्यम अथवा निम्न दर्जे के पात्रों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है, जिसमें श्रोताओं के सामने अङ्कों के अन्तराल में तथा बाद में होनेवाली घटनाओं को संक्षेप में कहकर नाटक की कथावस्तु के अवान्तर भागों का नाटक की मुख्यकथा से सम्बन्ध स्थापित कर दिया जाता है। साहित्यदर्पण में इसकी परिभाषा इस प्रकार दी जाती है – 'वृत्तवर्तिष्यमाणानां कथांशानां निदर्शकः। संक्षिप्तार्थस्तु विष्कम्भः आदावङ्कस्य दर्शितः।'

(ततः प्रविशति सुप्तोत्थितः शिष्यः।)

शिष्यः - वेलोपलक्षणार्थमादिष्टोऽस्मि तत्रभवता प्रवासादुपावृत्तेन काश्यपेन। प्रकाशं निर्गतस्तावदवलोकयामि कियदवशिष्टं रजन्या इति। (परिक्रम्यावलोक्य च) हन्त, प्रभातम्। तथाहि–

(तदनन्तर सोकर उठा हुआ शिष्य प्रवेश करता है।)

शिष्य - प्रवास से वापस आये हुए आदरणीय कण्व के द्वारा समय का परिज्ञान करने के लिए आदेश दिया गया हूँ। तो (बाहर) प्रकाश में निकलकर देखता हूँ कि रात्रि कितनी अवशिष्ट है। (चारों ओर घूमकर और देखकर) वाह, प्रातःकाल हो गया है। जैसे कि–

शब्दार्थ - सुप्तोत्थितः - सोकर उठा हुआ, **वेलोपलक्षणार्थम्** - समय का परिज्ञान करने के लिए, **आदिष्टः** - आज्ञप्त, **प्रवासात्** - प्रवास से, **उपावृत्तेन** - वापस आये हुए, **काश्यपेन** - कश्यप के कुल में उत्पन्न कण्व के द्वारा, **रजन्याः** - रात्रि का, **हन्त** - यह प्रसन्नता-सूचक अव्यय है।

यात्येकतोऽस्तशिखरं पतिरोषधीना-
मा विष्कृतोऽरुणपुरःसर एकतोऽर्कः।
तेजोद्वयस्य युगपद्व्यसनोदयाभ्यां
लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु॥2॥

एक ओर (धान आदि) शस्यों का स्वामी (चन्द्रमा) अस्ताचल के शिखर को जा रहा है। (और) दूसरी ओर अरुण (नामक अपने सारथि) को आगे किये हुए सूर्य उदित हो रहा है। (इस प्रकार) यह संसार दो तेजों के एक साथ अस्त एवं उदित होने से, अपनी अवस्थाओं के परिवर्तित होने के विषय में मानो शिक्षा दिया जा रहा है।।2।।

अन्वय–एकतः, ओषधीनाम्, पतिः, अस्तशिखरम्, याति, एकतः, अरुणपुरःसरः, अर्कः आविष्कृतः, लोकः, तेजोद्वयस्य, युगपत्, व्यसनोदयाभ्याम्, आत्मदशान्तरेषु, नियम्यते, इव।।2।।

शब्दार्थ - एकतः - एक ओर, **ओषधीनाम्** - (धान आदि) शस्यों का, **पतिः** - स्वामी (चन्द्रमा), **अस्तशिखरम्** - अस्ताचल के शिखर को, **याति** - जा रहा है, **एकतः** - एक ओर, **अरुणपुरःसरः** - अरुण को आगे किये हुए, **अर्कः** - सूर्य, **आविष्कृतः** - प्रकट हो रहा है, उदित हो रहा है; **लोकः** - संसार, **तेजोद्वयस्य** - दो तेजों के, **युगपत्** - एक साथ, **व्यसनोदयाभ्याम्** - एक साथ अस्त एवं उदित होने से, **आत्मदशान्तरेषु** - अपनी अवस्थाओं के परिवर्तित होने के विषय में, सुख-दुःख के विषय में; **नियम्यते** - शिक्षा दिया जा रहा है, **इव** - सा, तरह।।2।।

विशेष - ओषधीनां पतिः - यहाँ अत्यन्त मनोरम अर्थ सूचित किया गया है। कवि का भाव यह है - "ओषधियाँ अत्यन्त दुःसह मरण आदि हजारों विपत्तियों को विनष्ट करनेवाली हैं, किन्तु समय आ जाने पर, उनकी क्या बात, उनका पति चन्द्र भी नाश को प्राप्त हो रहा है।"

दशान्तरेषु - सूर्य और चन्द्र देव हैं। दूसरों को वरदान देने में समर्थ हैं, किन्तु काल-क्रम से वे भी उन्नति तथा अवनति को प्राप्त करते हैं, अतः वे सारी जगती को शिक्षा दे रहे हैं कि उन्नति तथा अवनति प्रकृति का नियम है। देवता भी इस नियम से नहीं बच सकते हैं। इसलिए मनुष्यों को भी चाहिए कि वे अपनी उन्नति के समय हर्ष तथा अवनति के समय विषाद न करें।

महाकवि कालिदास ने ही मेघदूत (2/48) में भी कहा है–

कस्यात्यन्तं सुखमुपनतं दुःखमेकान्ततो वा।
नीचैर्गच्छत्युपरि च दशा चक्रनेमिक्रमेण॥

इस श्लोक में समासोक्ति, तुल्ययोगिता, उत्प्रेक्षा अलङ्कार तथा वसन्ततिलका छन्द है।

अपि च–

अन्तर्हिते शशिनि सैव कुमुद्वती मे
दृष्टिं न नन्दयति संस्मरणीयशोभा।
इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य
दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि॥3॥

और भी—

चन्द्रमा के अस्त हो जाने पर स्मरणीय शोभावाली वही कुमुदिनी मेरी आँखों को नहीं आनन्दित कर रही है। वस्तुतः स्त्रियों का (अपने) प्रेमी व्यक्ति के परदेश-गमन से उत्पन्न दुःख अत्यन्त असह्य हुआ करता है।।3।।

अन्वय–शशिनि, अन्तर्हिते, संस्मरणीयशोभा सा, एव, कुमुद्वती, मे, दृष्टिम्, न, नन्दयति; नूनम्, अबलाजनस्य, इष्टप्रवासजनितानि, दुःखानि, अतिमात्रसुदुःसहानि, (भवन्ति) ।।3।।

शब्दार्थ– शशिनि - चन्द्रमा के, **अन्तर्हिते** - अस्त हो जाने पर, **संस्मरणीयशोभा** - केवल स्मरण का विषय है शोभा जिसकी ऐसी, **सा** - वह, **एव** - ही, **कुमुद्वती** - कुमुदिनी, **मे** - मेरी, **दृष्टिम्** - आँख को, **न** - नहीं, **नन्दयति** - आनन्दित कर रही है, **नूनम्** - वस्तुतः निश्चय ही, **अबलाजनस्य** - स्त्रियों के लिए, **इष्टप्रवासजनितानि** - प्रेमी व्यक्ति के परदेश-गमन से उत्पन्न, **दुःखानि** - दुःख, **अतिमात्रसुदुःसहानि** - अत्यन्त असह्य, (**भवन्ति** - हुआ करते हैं) ।।3।।

विशेष–संस्मरणीयशोभा–केवल स्मरण का विषय है शोभा जिसकी ऐसी। चन्द्रमा के रहने पर रात में ही कुमुदिनी विकसित होती है। चन्द्रमा की अनुपस्थिति में कुमुदिनी मलिन हो जाती है। विकास की अवस्था में कुमुदिनी लोगों की आँखों को अपनी ओर आकृष्ट करती है, परन्तु मलिनावस्था में वही कुमुदिनी आँखों को आनन्दित नहीं करती है। यहाँ कुमुदिनी को नायिका और चन्द्र को नायक के रूप में चित्रित किया गया है। नायक चन्द्र यद्यपि सकलङ्क है, फिर भी कुमुदिनी उसके लिए मलिन हो रही है। इसी प्रकार नायक दुष्यन्त भी सकलङ्क है, किन्तु शकुन्तला उसके लिए विकल है।

इस श्लोक में समासोक्ति, काव्यलिङ्ग, अर्थान्तरन्यास अलङ्कार तथा वसन्ततिलका छन्द है।

जीवनानन्द विद्यासागर, शारदारञ्जन राय तथा चौखम्भा के संस्करणों में निम्नलिखित दो और श्लोक दिये गये हैं। काले तथा निर्णयसागर के संस्करणों में ये श्लोक नहीं हैं–

1 - अपि च –

कर्कन्धूनामुपरि तुहिनं रञ्जयत्यग्रसन्ध्या
दार्भं मुञ्चत्युटजपटलं वीतनिद्रो मयूरः।
वेदिप्रान्तात् खुरविलिखितादुत्थिश्चैष सद्यः
पश्चादुच्चैर्भवति हरिणः स्वाङ्गमायच्छमानः॥

और भी -

प्रातःकालीन सन्ध्या बेर की झाड़ियों के ऊपर ओस की बूँदों को रक्तवर्ण की बना रही है। जगा हुआ मोर कुशनिर्मित कुटीर की छत को छोड़ रहा है और यह हरिण खुर से खोदे गये यज्ञ-वेदी के पार्श्वभाग से उठकर अपने शरीर को फैलाता हुआ शीघ्र ही शरीर के पिछले भाग से ऊँचा हो रहा है।

अन्वय–अग्रसन्ध्या कर्कन्धूनाम् उपरि तुहिनं रञ्जयति। वीतनिद्रः मयूरः दार्भम् उटजपटलं मुञ्चति। खुरविलिखितात्, वेदिप्रान्तात् उत्थितः एषः हरिणः च स्वाङ्गमायच्छमानः सद्यः पश्चात् उच्चैः भवति।

शब्दार्थ– अग्रसन्ध्या - प्रातःकालीन सन्ध्या, **कर्कन्धूनाम्** - बेर की झाड़ियों के, **उपरि** - ऊपर, **तुहिनम्** - ओस

की बूँदों को, **रञ्जयति** - रक्तवर्ण की बना रही है, **वीतनिद्रः** - जागा हुआ, **मयूरः** - मोर, **दार्भम्** - कुशनिर्मित, **उटजपटलम्** - कुटीर की छत को, **मुञ्चति** - छोड़ रहा है, **च** - और, **एषः** - यह, **हरिणः** - हरिण, **खुरविलिखितात्** - खुर से खोदे गये, **वेदिप्रान्तः** - यज्ञ-वेदी के पार्श्वभाग से, **उत्थितः** - उठकर, **स्वाङ्गम्** - अपने शरीर को, **आयच्छमानः** - फैलाता हुआ, **सद्यः** - शीघ्र ही, **पश्चात्** - शरीर के पिछले भाग से, **उच्चैः** - ऊँचा, **भवति** - हो रहा है।

2 - अपि च –

पादन्यासं क्षितिधरगुरोर्मूर्ध्नि कृत्वा सुमेरोः
क्रान्तं येन क्षपिततमसा मध्यमं धाम विष्णोः।
सोऽयं चन्द्रः पतति गगनादल्पशेषैर्मयूखै-
रत्यारूढिर्भवति महतामप्यपभ्रंशनिष्ठा॥

और भी -

अन्धकार को नष्ट करके जिसने पर्वतराज सुमेरु के शृङ्ग पर पैर (किरण) विन्यास करके विष्णु के मध्यम स्थान (आकाश) को व्याप्त कर लिया था, वहीं यह चन्द्रमा थोड़े बचे हुए किरणों के साथ आकाश से गिर रहा है। महान् लोगों की अत्यधिक उन्नति पतन का कारण हुआ करती है।

अन्वय–क्षपिततमसा येन क्षितिधरगुरोः सुमेरोः मूर्ध्नि पादन्यासं कृत्वा विष्णोः मध्यमं धाम क्रान्तं सः अयं चन्द्रः अल्पशेषैः मयूखैः गगनात् पतति। महताम् अपि अत्यारूढिः अपभ्रंशनिष्ठा भवति।

शब्दार्थ– क्षपिततमसा - अन्धकार को नष्ट करके, **येन** - जिसने, **क्षितिधरगुरोः** - पर्वतराज, **सुमेरोः** - सुमेरु के, **मूर्ध्नि** - शृङ्ग पर, **पादन्यासम्** - पैर (किरण) विन्यास को, **कृत्वा** - करके, **विष्णोः** - विष्णु के, **मध्यमम्** - मध्यम, **धाम** - स्थान को, **क्रान्तम्** - व्याप्त कर लिया था, **सः** - वही, **अयम्** - यह, **चन्द्रः** - चन्द्रमा, **अल्पशेषैः** - थोड़े बचे हुए, **मयूखैः** - किरणों के साथ, **गगनात्** - आकाश से, **पतति** - गिर रहा है, **महताम्** - महान् लोगों की, **अत्यारूढिः** - अत्यधिक उन्नति, **अपभ्रंशनिष्ठा** - पतन का कारण, **भवति** - हुआ करती है।

(प्रविश्यापटीक्षेपेण)

अनसूया–यद्यपि नाम विषयपराङ्मुखस्य जनस्यैतन्न विदितं तथापि तेन राज्ञा शकुन्तलायामनार्यमाचरितम्।
शिष्यः–यावदुपस्थितां होमवेलां गुरवे निवेदयामि।

(इति निष्क्रान्तः।)

अनसूया–प्रतिबुद्धाऽपि किं करिष्यामि। न मे उचितेष्वपि निजकरणीयेषु हस्तपादं प्रसरति। काम इदानीं सकामो भवतु, येनासत्यसन्धे जने शुद्धहृदया सखी पदं कारिता। अथवा दुर्वाससः शाप एष विकारयति। अन्यथा कथं स राजर्षिस्तादृशानि मन्त्रयित्वैतावतः कालस्य लेखमात्रमपि न विसृजति। तदितोऽभिज्ञानमङ्गुलीयकं तस्य विसृजावः। दुःखशीले तपस्विजने कोऽभ्यर्थ्यताम्। ननु सखीगामी दोष इति व्यवसिताऽपि न पारयामि प्रवासप्रतिनिवृत्तस्य तातकाश्यपस्य दुष्यन्तपरिणीतामापन्नसत्त्वां शकुन्तलां निवेदयितुम्। इत्थंगतेऽस्माभिः किं करणीयम्।

(बिना पर्दा हटाये ही प्रवेश करके)

अनसूया–यद्यपि विषयों से विमुख जन (हम लोगों) को यह सब ज्ञात नहीं है, तो भी उस राजा (दुष्यन्त) के द्वारा शकुन्तला के साथ अभद्र आचरण किया गया है।

शिष्यः–तो उपस्थित इस हवन की वेला को गुरु (कण्व) से निवेदन करता हूँ अर्थात् गुरु से निवेदन करता हूँ कि हवन की वेला हो गयी है।

(ऐसा कहकर निकल गया।)

अनसूया–जगकर भी क्या करूँगी? दैनिक कार्यों में भी हाथ-पैर नहीं चल रहे हैं। काम अब सफलमनोरथ हो, जिसने झूठी प्रतिज्ञावाले व्यक्ति के साथ निष्कपट हृदयवाली सखी (शकुन्तला) का प्रेम कराया है अथवा दुर्वासा का शाप यह गड़बड़

उत्पन्न कर रहा है। नहीं तो, कैसे वह राजर्षि उस प्रकार के आश्वासनों को देकर भी इतने दिनों से एक पत्र भी नहीं भेज रहा है। तो यहाँ से, पहचान के लिए दी गयी अँगूठी उसके पास हम भेजेंगी। निरन्तर कष्ट सहन करनेवाले तपस्विजनों में किससे प्रार्थना की जाय? सखी (शकुन्तला) पर दोष जायगा। इसलिए (कहने के लिए) उद्यत होकर भी मैं प्रवास से वापस आये हुए पिता कण्व से यह निवेदन करने में असमर्थ हूँ कि शकुन्तला दुष्यन्त के साथ विवाहित हो गयी है और वह गर्भिणी है। ऐसी दशा में हमें क्या करना चाहिए?

शब्दार्थ– अपटीक्षेपेण - बिना पर्दा हटाये ही, अपने हाथ से पर्दा हटाकर, **प्रविश्य** - प्रवेश करके, **विषयपराङ्मुखस्य** - विषयों से विमुख, **अनार्यम्** - अनुचित, अभद्र; **आचरितम्** - आचरण किया गया है, **होमवेलाम्** - हवन की वेला को, **प्रबुद्धा** - जगी हुई, **उचितेषु** - अभ्यस्त, **निजकरणीयेषु** - अपने दैनिक कार्यों में, **सकामः** - सफल मनोरथ, **असत्यसन्धे** - झूठी प्रतिज्ञावाले, **शुद्धहृदया** - निष्कपटहृदयवाली, **अभिज्ञानम्** - निशानी, पहचान के लिए दी गयी, **अङ्गुलीयकम्** - अँगूठी, **सखीगामी** - सखी पर आ पड़ेगा, **व्यवसिता** - तत्पर, **प्रवासप्रतिनिवृत्तस्य** - परदेश से वापस आये हुए, **दुष्यन्तपरिणीताम्** - दुष्यन्त के साथ विवाहित, **आपन्नसत्त्वाम्** - गर्भिणी, **इत्थंगते** - ऐसी दशा में।

विशेष–अपटीक्षेपेण–नियम यह है कि बिना पूर्व सूचना के किसी पात्र का रङ्गमञ्च पर प्रवेश नहीं हुआ करता, किन्तु जब कभी कोई अत्यावश्यक सूचना देनी होती है अथवा किसी घबराहट की अवस्था में पात्र अपने हाथ से पर्दे को जरा एक ओर करके बगल से रङ्गमञ्च पर आ जाते हैं तो इसे अपटीक्षेप प्रवेश कहते हैं।

अनार्यम्–दुष्यन्त जब से आश्रम से गया तब से शकुन्तला का कोई हाल-चाल भी नहीं मँगाया। अपने वादों को पूरा नहीं किया। यही कारण है कि अनसूया उसके व्यवहार को अनुचित बतला रही है।

कामः–युवक-युवतियों को प्रेम-पाश में फँसाकर पीड़ित करना ही कामदेव की इच्छा रहती है, अतः अब उसकी इच्छा पूरी हो गयी है, क्योंकि शकुन्तला दुष्यन्त के लिए मर रही है और वह इसकी खबर भी नहीं ले रहा है।

अङ्गुलीयकम्–अनसूया उस अँगूठी की बात कर रही है, जिसे दुष्यन्त ने जाने के समय शकुन्तला को दिया था।

दुःखशीले–तपस्वी लोग दुःख झेलकर तपस्या करनेवाले हैं, अतः प्रेमसन्देश को ले जाने में कौन सहायक होगा?

(प्रविश्य)

प्रियंवदा –(सहर्षम्) सखि, त्वरस्व त्वरस्व शकुन्तलायाः प्रस्थानकौतुकं निर्वर्तयितुम्।

अनसूया – सखि, कथमेतत्।

प्रियंवदा – शृणु। इदानीं सुखशयितप्रच्छिका शकुन्तलासकाशं गताऽस्मि।

अनसूया – ततस्ततः।

प्रियंवदा – तावदेनां लज्जावनतमुखीं एनां परिष्वज्य तातकाश्यपे-नैवमभिनन्दितम्। दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि पावक एवाहुतिः पतिता। वत्से, सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता। अद्यैव ऋषिरक्षितां त्वां भर्तुः सकाशं विसर्जयामि।

(प्रवेश करके)

प्रियंवदा – (प्रसन्नतापूर्वक) सखि, शकुन्तला के पतिगृह-गमन-काल के मङ्गल को पूरा करने के लिए जल्दी करो, जल्दी करो।

अनसूया – सखि, यह कैसे (सम्भव हुआ)?

प्रियंवदा – सुनो। सुखपूर्वक सोना हुआ या नहीं, यह पूछने की इच्छा से मैं अभी-अभी शकुन्तला के पास गयी थी।

अनसूया – उसके बाद, उसके बाद (क्या हुआ)?

प्रियंवदा – तब लज्जा के कारण नीचे मुख झुकाये हुए इस (शकुन्तला) को गले लगाकर पिता कण्व के द्वारा इस प्रकार अभिनन्दन किया गया–'सौभाग्य से धुएँ से विह्वल आँखवाले भी यजमान की आहुति ठीक अग्नि में ही पड़ी है। बेटी, योग्य शिष्य को प्रदान की गयी विद्या की तरह तुम अशोचनीय हो गयी हो। आज ही ऋषियों की देख-रेख में तुम्हें (तुम्हारे) पति के पास भेज दे रहा हूँ।'

शब्दार्थ–प्रस्थानकौतुकम् – प्रस्थान के समय किये जानेवाले मङ्गल को, **निर्वर्तयितुम् -** निष्पन्न करने के लिए, पूरा करने के लिए, **सुखशयनपृच्छिका -** सुखपूर्वक सोना हुआ या नहीं यह पूछने की इच्छा से, **लज्जावनतमुखीम् -** लज्जा के कारण नीचे मुख झुकाये हुए, **परिष्वज्य -** गले लगाकर, **अभिनन्दितम् -** अभिनन्दन किया गया, **दिष्ट्या -** सौभाग्य से, **धूमाकुलितदृष्टेः -** धुएँ से विह्वल आँखवाले, **अशोचनीया -** अशोचनीय , **संवृत्ता -** हो गयी हो, **ऋषिरक्षिताम् -** ऋषियों की देख-रेख में।

टिप्पणी–प्रस्थानकौतुकम् - कौतुक का अर्थ है– माङ्गलिक कार्य अथवा मङ्गलाचार। प्रस्थान के समय किये जानेवाले माङ्गलिक कृत्य को प्रस्थानकौतुक कहते हैं।

धूमाकुलितदृष्टेः–यजमान हवन कर रहा था। धुएँ से उसकी आँखें व्याकुल हो उठीं। आँखें मूँदे ही उसने आहुति फेंकी। पर सौभाग्य तो यह कि वह जाकर सीधे आग में ही पड़ी। ठीक यही बात शकुन्तला की है। शकुन्तला ने अपने पिता कण्व की अनुपस्थिति में दुष्यन्त से विवाह किया। पर संयोग और सौभाग्य की बात यह है कि उसने अभिभावक की अनुपस्थिति में भी सुयोग्य वर का वरण किया है।

सुशिष्यपरिदत्ता–जिस प्रकार अत्यन्त योग्य शिष्य को पढ़ायी गयी विद्या के विषय में गुरु नहीं सोचता कि मेरी पढ़ायी विद्या का सदुपयोग होगा या नहीं। वह यह खूब जानता है कि मेरी विद्या अवश्य ही बढ़ेगी, फैलेगी। इसी प्रकार योग्य पात्र के हाथ में शकुन्तला के पड़ जाने से कण्व को भी उसके विषय में सोच करने की आवश्यकता नहीं है।

अनसूया – अथ केन सूचितस्तातकाश्यपस्य वृत्तान्तः।
प्रियंवदा – अग्निशरणं प्रविष्टस्य शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या।
अनसूया – (सविस्मयम्) कथमिव।

अनसूया – अच्छा, किसके द्वारा तात काश्यप (कण्व) को यह समाचार बतलाया गया?

प्रियंवदा – यज्ञशाला में गये हुए (उनको) अशरीरिणी छन्दोमयी वाणी के द्वारा (यह सूचना दी गयी)।

अनसूया – (आश्चर्य के साथ) किस प्रकार?

शब्दार्थ – सूचितः - बतलाया गया, **वृत्तान्तः -** समाचार, **अग्निशरणम् -** यज्ञशाला में, **सविस्मयम् -** आश्चर्य के साथ।

विशेष – अग्निशरणम् - यज्ञशाला को अग्निशरण कहते हैं। इसमें तीन कुण्ड बने होते हैं। तीनों में तीन अग्नियाँ स्थापित रहती हैं। इनके नाम हैं - गार्हपत्य अग्नि, आहवनीय अग्नि तथा दक्षिणाग्नि।

छन्दोमय्या – छन्दोबद्ध आकाशवाणी के द्वारा।

प्रियंवदा – (संस्कृतमाश्रित्य)
दुष्यन्तेनाहितं तेजो दधानां भूतये भुवः।
अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव॥4॥

प्रियंवदा–(संस्कृत भाषा का आश्रय लेकर अर्थात् संस्कत में)

हे ब्रह्मन्, दुष्यन्त के द्वारा स्थापित तेज (वीर्य) को, भूमण्डल के कल्याण के लिए, धारण की हुई पुत्री को, अपने अन्दर आग को धारण करनेवाली शमी की तरह पवित्र समझो।।4।।

अन्वय–ब्रह्मन्, दुष्यन्तेन, आहितम्, तेजः, भुवः, भूतये, दधानाम्, तनयाम्, अग्निगर्भाम् शमीम्, इव, अवेहि।।4।।

शब्दार्थ– ब्रह्मन् - हे ब्रह्मन्, **दुष्यन्तेन -** दुष्यन्त के द्वारा, **आहितम् -** स्थापित, **तेजः -** तेज को, **भुवः -** भूमण्डल के, **भूतये -** कल्याण के लिए, **दधानाम् -** धारण की हुई, **तनयाम् -** पुत्री को, **अग्निगर्भाम् -** अपने अन्दर आग को धारण करनेवाली, **शमीम् -** शमी की, **इव -** तरह, **अवेहि -** समझो।।4।।

विशेष–भूतये भुवः - इससे यह सूचित होता है कि शकुन्तला का यह गर्भस्थ पुत्र आगे चलकर चक्रवर्ती सम्राट् होगा।

अग्निगर्भां शमीम् - शमी वृक्ष के अन्दर अग्नि के प्रवेश की घटना महाभारत के अनुशासन तथा शल्य पर्व में वर्णित

है। अनुशासन पर्व के अनुसार घटना इस प्रकार है – देवों की प्रार्थना पर अग्नि ने शिव के वीर्य को धारण किया, किन्तु वीर्य के तेज को सहन करने की शक्ति अग्नि में न थी, अतः उसने क्रमशः पीपल और शमी में प्रवेश किया। देवों ने अग्नि को ढूँढ़कर शमी को अग्नि का स्थायी आधार बना दिया। दूसरी कथा शल्य पर्व में इस प्रकार है– भृगु के शाप से भयभीत अग्नि ने शमी वृक्ष में प्रवेश किया। यही कारण है कि थोड़ी रगड़ से भी शमी से आग प्रकट हो जाती है।

अनसूया – (प्रियंवदामाश्लिष्य) सखि, प्रियं मे। किन्त्वद्यैव शकुन्तला नीयत इत्युत्कण्ठासाधारणं परितोषमनुभवामि।

प्रियंवदा – सखि, आवां तावदुत्कण्ठां विनोदयिष्यावः। सा तपस्विनी निर्वृता भवतु।

अनसूया – तेन ह्येतस्मिंश्चूतशाखावलम्बिते नारिकेलसमुद्गके एतन्निमित्तमेव कालान्तरक्षमा निक्षिप्ता मया केसरमालिका। तदिमां हस्तसंनिहितां कुरु। यावदहमपि तस्यै गोरोचनां तीर्थमृत्तिकां दूर्वाकिसलयानीति मङ्गलसमालम्भनानि विरचयामि।

अनसूया–(प्रियंवदा का आलिङ्गन करके) सखि, मेरे लिए बहुत प्रिय (समाचार) है, किन्तु आज ही शकुन्तला (पतिगृह) ले जायी जा रही है, इसलिए उत्कण्ठा (खेद) के कारण सामान्य सन्तोष का अनुभव कर रही हूँ।

प्रियंवदा–सखि, हम दोनों तो (अपने) खेद को दूर कर लेंगी। वह तपस्विनी सुखी हो।

अनसूया–तो ठीक है। इस आम की डाली में लटकते हुए नारियल के डिब्बे में बहुत दिनों तक ताजी रहनेवाली केसर की एक सुन्दर-सी माला, इसी अवसर के लिए, मेरे द्वारा रखी गयी है। तो इसे तुम हाथ में ले लो। मैं भी तब तक उसके लिए गोरोचन, तीर्थों की मिट्टी तथा दूब के अग्रभाग आदि माङ्गलिक अङ्गराग (की सामग्री) को तैयार करती हूँ।

शब्दार्थ– उत्कण्ठासाधारणम् - खेद के कारण सामान्य, **परितोषम् -** सन्तोष को, सन्तोष का, **तपस्विनी -** बेचारी, **निर्वृता -** सुखी, **चूतशाखावलम्बिते -** आम की डाली में लटकते हुए, **नारिकेलसमुद्गके -** नारियल के गोल्लक (डिब्बे) में, **कालान्तरक्षमा -** बहुत दिनों तक ताजी रहनेवाली, **निक्षिप्ता -** रखी गयी, **केसरमालिका -** केसर की सुन्दर-सी माला, **हस्तसंनिहिताम् -** हाथ में स्थापित, हाथ में लेना, **मङ्गलसमालम्भनानि -** माङ्गलिक लेपन को, शरीर पर लगाने के लिए माङ्गलिक अङ्गराग अथवा उबटन को।

विशेष– कालान्तरक्षमा - इस कथन से प्रतीत होता है कि कालिदास के समय में भी आज के रेफ्रिजरेटर का कोई छोटा रूप प्रचलित था। उस समय लोग नारियल के गोल्लक में कोई पालिश लगाते थे, जिससे उसके भीतर रखी गयी चीज बहुत दिनों तक अपने स्वाभाविक रूप में वर्तमान रहा करती थी।

प्रियंवदा- तथा क्रियताम्।

(अनसूया निष्क्रान्ता। प्रियंवदा नाट्येन सुमनसो गृह्णाति।)

(नेपथ्ये)

गौतमि, आदिश्यन्तां शार्ङ्गरवमिश्राः शकुन्तलानयनाय।

प्रियंवदा - (कर्णं दत्त्वा) अनसूये, त्वरस्व त्वरस्व। एते खलु हस्तिनापुरगामिनः ऋषयः शब्दाय्यन्ते।

प्रियंवदा- वैसा ही करो।

(अनसूया निकल गयी। प्रियंवदा फूलों को लेने का अभिनय करती है।)

(पर्दे के पीछे)

गौतमी, शकुन्तला को (हस्तिनापुर) पहुँचाने के लिए श्रेष्ठ शार्ङ्गरव आदि को आदेश दो।

प्रियंवदा– (कान लगाकर) अनसूया, शीघ्रता करो, शीघ्रता करो। निश्चय ही ये हस्तिनापुर को जानेवाले ऋषि बुलाये जा रहे हैं।

शब्दार्थ– सुमनसः - फूलों को, **शार्ङ्गरवमिश्राः -** शार्ङ्गरव हैं प्रधान जिनमें, शार्ङ्गरव आदि, **हस्तिनापुरगामिनः -** हस्तिनापुर को जानेवाले।

विशेष– शार्ङ्गरवमिश्राः – मिश्र शब्द दो अर्थों में प्रयुक्त होता है– (1) मिश्रित अथवा इत्यादि तथा (2) पूज्य अथवा प्रधान। यहाँ मिश्र शब्द प्रधान अर्थ में प्रयुक्त हुआ है।

(प्रविश्य समालम्भनहस्ता)

अनसूया - सखि, एहि। गच्छावः। (इति परिक्रामतः।)

प्रियंवदा - (विलोक्य) एषा सूर्योदय एव शिखामज्जिता प्रतीष्टनीवारहस्ताभिः स्वस्तिवाचनिकाभिस्तापसीभिरभिनन्द्यमाना शकुन्तला तिष्ठति। उपसर्पाव एनाम्। (इत्युपसर्पतः।)

(ततः प्रविशति यथोद्दिष्टव्यापारा आसनस्था शकुन्तला)

तापसीनामन्यतमा - (शकुन्तलां प्रति) जाते, भर्तुर्बहुमानसूचकं महादेवीशब्दं लभस्व।

द्वितीया - वत्से, वीरप्रसविनी भव।

तृतीया - वत्से, भर्तुर्बहुमता भव।

(इत्याशिषो दत्त्वा गौतमीवर्जं निष्क्रान्ताः।)

सख्यौ - (उपसृत्य) सखि, सुखमज्जनं ते भवतु।

शकुन्तला - स्वागतं मे सख्योः। इतो निषीदतम्।

(माङ्गलिक लेपन को हाथ में लिये हुए प्रवेश करके)

अनसूया - सखि, आओ, चलें (ऐसा कहकर दोनों चारों ओर घूमती हैं।)

प्रियंवदा - (देखकर) सूर्योदय के समय ही पूर्ण स्नान किये हुए यह शकुन्तला, नीवार हाथ में लिये हुए स्वस्तिवाचन का पाठ करती हुई, तपस्विनियों से अभिनन्दन की जाती हुई बैठी है। (तो) हम दोनों इसके पास चलें। (ऐसा कहकर उसके पास जाती हैं।)

(तदनन्तर पूर्वनिर्दिष्ट रूप से आसन पर बैठी हुई शकुन्तला प्रवेश करती है)

तपस्विनियों में से एक - (शकुन्तला के प्रति) बेटी, पति के अत्यन्त आदरसूचक महादेवी शब्द को प्राप्त करो।

दूसरी - पुत्री, वीर पुत्र को जन्म देनेवाली हो।

तीसरी - बेटी, पति की अत्यन्त प्यारी बनो।

(इस प्रकार आशीर्वाद देकर गौतमी को छोड़कर सभी निकल गयीं।)

दोनों सखियाँ - (पास जाकर) सखि, तेरा स्नान सुखकारक हो (अर्थात् तुम सर्वदा सुखी रहो)।

शकुन्तला - मेरी सखियों का स्वागत है। इस ओर बैठिये।

शब्दार्थ– समालम्भनहस्ता - माङ्गलिक लेपन को हाथ में लिये हुए, **शिखामज्जिता -** सिर धोकर स्नान किये हुए, पूर्ण स्नान किये हुए, **प्रतीष्टनीवारहस्ताभिः -** लिया है नीवार हाथ में जिन्होंने, नीवार हाथ में लिये हुए, **स्वस्तिवाचनिकाभिः -** स्वस्तिवाचन का पाठ करती हुई, **तापसीभिः -** तपस्विनियों से, **अभिनन्द्यमाना -** अभिनन्दन की जाती हुई, **यथोद्दिष्टव्यापारा -** पुर्वनिर्दिष्ट रूप से, **भर्तुः -** पति के, **बहुमानसूचकम् -** अत्यन्त आदर को सूचित करनेवाले, **महादेवीशब्दम् -** महादेवी शब्द को, **वीरप्रसविनी -** वीर पुत्र को जन्म देनेवाली, **बहुमता -** अत्यन्त प्रिय, **गौतमीवर्जम् -** गौतमी को छोड़कर, **सुखमज्जनम् -** सुखदायक स्नान, **इतः -** इस ओर।

विशेष–नीवारहस्ताभिः - आज भी स्त्रियाँ विवाह आदि किसी माङ्गलिक कार्य में खाली हाथ नहीं जातीं। वे हाथ में कोई-न-कोई अन्न लेकर ही जाती हैं, क्योंकि खाली हाथ जाना अशुभ माना जाता है।

महादेवीशब्दम्–राजा अपनी अत्यन्त प्रियतमा पटरानी को सर्वदा महादेवी कहा करता था। महादेवी का ही बेटा राज्य का उत्तराधिकारी हुआ करता था।

उभे – (मङ्गलपत्राण्यादाय। उपविश्य) हला, सज्जा भव। यावत्ते मङ्गलसमालम्भनं विरचयावः।

शकुन्तला -इदमपि बहु मन्तव्यम्। दुर्लभमिदानीं मे सखीमण्डनं भविष्यति। (इति बाष्पं विसृजति।)

उभे – सखि, उचितं न ते मङ्गलकाले रोदितुम्। (इत्यश्रूणि प्रमृज्य नाट्येन प्रसाधयतः।)

प्रियंवदा – आभरणोचितं रूपमाश्रमसुलभैः प्रसाधनैर्विप्रकार्यते।

(प्रविश्योपायनहस्तावृषिकुमारकौ)

उभौ – इदमलंकरणम्। अलंक्रियतामत्रभवती।

(सर्वा विलोक्य विस्मिताः।)

गौतमी – वत्स नारद, कुत एतत्।

प्रथमः – तातकाश्यपप्रभावात्।

गौतमी – किं मानसी सिद्धिः।

दोनों – (माङ्गलिक पत्तों को लेकर और बैठकर) सखि, सावधान हो जाओ। हम लोग तुम्हारा माङ्गलिक अलङ्करण (सजावट) करेंगी।

शकुन्तला – यह भी बहुत मानने के योग्य है। (क्योंकि) अब मेरे लिये सखियों के द्वारा अलंकृत होना दुर्लभ हो जायगा। (ऐसा कहकर आँसू बहाती है।)

दोनों – सखि, मङ्गल के समय पर तुम्हारा रोना उचित नहीं है। (ऐसा कहकर आँसू पोंछकर सजाने का अभिनय करती हैं।)

प्रियंवदा – आभूषणों के योग्य (शकुन्तला का यह) सौन्दर्य आश्रम में प्राप्त पुष्प आदि प्रसाधनों से विकृत किया जा रहा है।

(हाथ में उपहार लिये हुए दो ऋषिकुमार प्रवेश करके)

दोनों–यह है आभूषण। आदरणीया (शकुन्तला) को अलंकृत किया जाय।

(सभी देखकर आश्चर्यचकित होती हैं।)

गौतमी – वत्स नारद, कहाँ से यह प्राप्त हुआ?

पहला – पिता कण्व के प्रभाव से।

गौतमी – क्या (यह उनके) मानसिक संकल्प के फल हैं?

शब्दार्थ– मङ्गलपत्राणि - माङ्गलिक पत्तों को, **सज्जा** - सावधान, **सखीमण्डनम्** - सखियों के द्वारा अलंकृत होना, **प्रसाधयतः** - अलंकृत करती हैं, **आभरणोचितम्** - आभूषणों के योग्य, **आश्रमसुलभैः** - आश्रम में प्राप्य, **प्रसाधनैः** - प्रसाधनों से, **विप्रकार्यते-** विकृत किया जा रहा है, **उपायनहस्तौ** - हाथ में उपहार लिये हुए, **अलङ्करणम्** - आभूषण, **अत्रभवती** - आदरणीया शकुन्तला, **विस्मिताः** - आश्चर्य से चकित, **मानसी** - मानसिक, **सिद्धिः** - सफलता।

विशेष–मङ्गलसमालम्भनम् - विवाह आदि के अवसर पर युवतियों के गालों पर कस्तूरी आदि से फूल-पत्तियाँ बनायी जाती थीं। उनके जूड़े में, कानों में तथा बाँहों आदि में फूल तथा पत्तियाँ बाँधी जाती थीं। यही मङ्गलसमालम्भन कहलाता है।

आभरणोचितम्–संसार की बहुत-सी वस्तुएँ सजा देने से द्विगुणित सुन्दर हो जाती हैं। शकुन्तला का अनुपम सौन्दर्य बहुमूल्य अलङ्कारों से सजा देने पर अत्यन्त लुभावना बन जाता है। यही कारण है कि प्रियंवदा उसे आभरणों के योग्य बतला रही है।

विप्रकार्यते–विकृत किया जा रहा है। आभूषणों से चेहरे का सौन्दर्य बढ़ता है, किन्तु इन फूलों-पत्तों से तो शकुन्तला का दमकता रूप कुछ विकृत-सा प्रतीत होता है। इनसे शकुन्तला के सौन्दर्य की श्रीवृद्धि नहीं हो रही है, अपितु शकुन्तला के सौन्दर्य से इनकी श्रीवृद्धि हो रही है।

मानसी सिद्धिः – मन से सोचते ही जो वस्तु आकर सामने उपस्थित हो जाय उसे मानसी सिद्धि अथवा मानसिक संकल्प का फल कहते हैं।

द्वितीयः – न खलु। श्रूयताम्। तत्रभवता वयमाज्ञप्ताः शकुन्तलाहेतोर्वनस्पतिभ्यः कुसुमान्याहरतेति। तत इदानीम् – क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरुणा माङ्गल्यमाविष्कृतं

निष्ठ्यूतश्चरणोपभोगसुभगो लाक्षारसः केनचित्।
अन्येभ्यो वनदेवताकरतलैरापर्वभागोत्थितै-
र्दत्तान्याभरणानि नः किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्द्विभिः॥5॥

दूसरा—नहीं। सुनो। पूज्य पिता कण्व के द्वारा हम लोगों को आज्ञा मिली कि शकुन्तला के लिए पेड़-पौधों से फूलों को चुनकर लाओ। उसके बाद अब-

किसी वृक्ष के द्वारा चन्द्रमा की तरह धवल माङ्गलिक रेशमी वस्त्र प्रकट किया गया। किसी (वृक्ष) के द्वारा पैरों में उपयोग के योग्य अलक्तक टपकाया गया। अन्य (वृक्षों) के द्वारा कलाई तक निकले हुए तथा उनके निकलते हुए किसलयों (कोपलों) की प्रतिस्पर्धा करनेवाले वन-देवता के करतलों से आभूषण दिये गये।।5।।

अन्वय—केनचित्, तरुणा, इन्दुपाण्डु, माङ्गल्यम्, क्षौमम्, आविष्कृतम्; केनचित्, चरणोपभोगसुलभः, लाक्षारसः, निष्ठ्यूतः, अन्येभ्यः, आपर्वभागोत्थितैः, तत्किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्द्विभिः, वनदेवताकरतलैः, न आभरणानि दत्तानि।।5।।

शब्दार्थ— केनचित् - किसी, **तरुणा -** वृक्ष के द्वारा, **इन्दुपाण्डु -** चन्द्रमा की तरह धवल, **माङ्गल्यम् -** माङ्गलिक, **क्षौमम् -** रेशमी वस्त्र, **आविष्कृतम् -** प्रकट किया गया, प्रकट करके दिया गया, **केनचित् -** किसी (वृक्ष) के द्वारा, **चरणोपभोगसुलभः -** पैरों में उपयोग के योग्य, **लाक्षारसः -** अलक्तक, महावर, **निष्ठ्यूत -** चुवाया गया, टपकाया गया; **अन्येभ्यः -** अन्य (वृक्षों) से, **आपर्वभागोत्थितैः -** कलाई तक निकले हुए, **तत्किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्द्विभिः -** उनके निकलते हुए किसलयों (कोंपलों) की प्रतिस्पर्धा करनेवाले, **वनदेवताकरतलैः -** वनदेवता के करतलों से, **आभरणानि -** आभूषण, **दत्तानि -** दिये गये।।5।।

विशेष— वनस्पतिभ्यः — आजकल वनस्पति शब्द का प्रयोग वृक्षमात्र के लिए किया जाता है, किन्तु वनस्पति का पारिभाषिक अर्थ है— बिना पुष्प के ही फल प्रदान करनेवाले वृक्ष। 'अपुष्पाः फलवन्तो ये ते वनस्पतयः स्मृताः।' (मनु0 3-47)।

उपमा अलङ्कार, शार्दूलविक्रीडित छन्द।

प्रियंवदा — (शकुन्तलां विलोक्य) हला, अनयाऽभ्युपपत्त्या सूचिता ते भर्तुर्गेहेऽनुभवितव्या राजलक्ष्मीः।
(शकुन्तला व्रीडां रूपयति।)
प्रथमः — गौतम, एह्येहि। अभिषेकोत्तीर्णाय काश्यपाय वनस्पतिसेवां निवेदयावः।
द्वितीयः — तथा। (इति निष्क्रान्तौ।)
सख्यौ — अये, अनुपयुक्तभूषणोऽयं जनः। चित्रकर्मपरिचयेनाङ्गेषु ते आभरणविनियोगं कुर्वः।
शकुन्तला — जाने वां नैपुणम्। (उभे नाट्येनालंकुरुतः।)

प्रियंवदा — (शकुन्तला को देखकर) सखि, (वनस्पतियों के) इस अनुग्रह से सूचित होता है कि तुम्हारे द्वारा पति के घर में राजलक्ष्मी अनुभव की जायगी (अर्थात् तुम पति-गृह में राजलक्ष्मी का उपभोग करोगी)।

(शकुन्तला लज्जा का अभिनय करती है।)

पहला — गौतम आओ-आओ। स्नान करके (नदी से) निकले हुए काश्यप से वृक्षों की (इस) सेवा को निवेदित कर दें।

दूसरा — ठीक है। (इस प्रकार दोनों निकल गये।)

दोनों सखियाँ — ओह, हम लोगों ने कभी आभूषणों का उपयोग नहीं किया है। (तो भी) चित्रों को देखने से प्राप्त अनुभव के द्वारा तुम्हारे अंगों में आभूषणों को पहना रहे हैं।

शकुन्तला — मैं तुम दोनों की निपुणता को जानती हूँ।

(दोनों अभिनयपूर्वक आभूषण पहनाती हैं।)

शब्दार्थ— हला - सखी, **अभ्युपपत्त्या -** अनुग्रह से, **अनुभवितव्या -** अनुभव की जायगी, **अभिषेकोत्तीर्णाय -** स्नान करके (नदी से) निकले हुए, **वनस्पतिसेवाम् -** वृक्षों की सेवा को, **अनुपयुक्तभूषणः -** जिसने कभी आभूषण का

उपयोग नहीं किया है ऐसा, **चित्रकर्मपरिचयेन -** चित्रकारी से परिचय होने के कारण या चित्रों को देखने से प्राप्त अनुभव के कारण, **आभरणविनियोगम् -** आभूषणों का विन्यास, **नैपुणम् -** निपुणता को।

विशेष– राजलक्ष्मीः - वनदेवता के द्वारा अकस्मात् बहुमूल्य आभूषणों के दिये जाने से यह बात सूचित होती है कि भविष्य में तुम ऐश्वर्य का उपभोग करोगी। आभूषणों की उपलब्धि भावी सुख के लिए शकुन है।

चित्रकर्मपरिचयेन–इसके दो अर्थ हो सकते हैं - स्वयं चित्र बनाने के कार्य से परिचित होने के कारण अथवा दूसरों के द्वारा निर्मित चित्रों के देखने से प्राप्त संस्कार के कारण।

(ततः प्रविशति स्नानोत्तीर्णः काश्यपः।)

काश्यपः -

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठः स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकसः
पीड्यन्ते गृहिणः कथं नु तनयाविश्लेषदुःखैर्नवैः॥6॥

(इति परिक्रामति।)

(तदनन्तर स्नान करके आये हुए काश्यप प्रवेश करते हैं।)

काश्यप–आज शकुन्तला (पतिगृह) जायगी, इसलिए हृदय दुःख से भर रहा है। गला अश्रु रोकने से अवरुद्ध है, दृष्टि चिन्ता के कारण निश्चेष्ट हो गयी है। वन में निवास करनेवाले मुझे इस समय शकुन्तला के प्रति स्नेह के कारण ऐसी विकलता है, तो गृहस्थ लोग पहली बार होनेवाले पुत्री के वियोग से उत्पन्न महान् दुःख से कितना पीड़ित होते होंगे?।।6।।

(ऐसा कहते हुए चारों ओर घूमते हैं।)

अन्वय–अद्य, शकुन्तला, यास्यति, इति, हृदयम्, उत्कण्ठया, संस्पृष्टम्, कण्ठः, स्तम्भितवाष्पकलुषः, (आस्ते), दर्शनम्, चिन्ताजडम् (वर्तते); अरण्यौकसः, मम, तावत्, स्नेहात्, ईदृशम्, इदम्, वैक्लव्यम्, (आस्ते, तर्हि), गृहिणः, नवैः, तनयाविश्लेषदुःखैः, कथं नु, पीड्यन्ते।।6।।

शब्दार्थ– अद्य - आज, **शकुन्तला -** शकुन्तला, **यास्यति -** जायगी, **इति -** इसलिए, **हृदयम् -** हृदय, **उत्कण्ठया -** दुःख से, **संस्पृष्टम् -** संस्पृष्ट हो रहा है, भर रहा है, **कण्ठः -** गला, **स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषः -** रोके गये अश्रु-प्रवाह से भरा हुआ है, **दर्शनम् -** दृष्टि, **चिन्ताजडम् -** चिन्ता के कारण निश्चेष्ट, (**वर्तते** - हो गयी है), **अरण्यौकसः -** वन में निवास करनेवाले, **मम -** मुझे, **तावत् -** इस समय, **स्नेहात् -** स्नेह के कारण, **ईदृशम् -** ऐसी, **इदम् -** यह, **वैक्लव्यम् -** विकलता, (**आस्ते -** है, **तर्हि -** तो,) **गृहिणः -** गृहस्थ लोग, **नवैः -** पहली बार होनेवाले, **तनयाविश्लेषदुःखैः -** पुत्री के वियोग से उत्पन्न महान् दुःख से, **कथं नु -** क्यों न, कितना, **पीड्यन्ते -** पीड़ित होते होंगे?।।6।।

विशेष–अरण्यौकसः....गृहिणः - वन में वे लोग निवास करते हैं, जो सांसारिक मोह-माया छोड़ चुके होते हैं, गृहस्थी में होनेवाले सम्बन्धों से ऊपर उठ चुके रहते हैं। शकुन्तला के पतिगृह-गमन के समय जब वनवासी कण्ठ को इतनी विह्वलता है, तो गृहस्थ लोगों को कितनी होती होगी, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती है।

सख्यौ - हला शकुन्तले, अवसितमण्डनाऽसि। परिधत्स्व साम्प्रतं क्षौमयुगलम्। (शकुन्तलोत्थाय परिधत्ते।)
गौतमी - जाते, एष ते आनन्दपरिवाहिणा चक्षुषा परिष्वजमान इव गुरुरुपस्थितः। आचारं तावत् प्रतिपद्यस्व।
शकुन्तला - (सव्रीडम्) तात, वन्दे।

दोनों सखियाँ– सखि शकुन्तला, तुम्हें सजाने-सँवारने का कार्य पूरा हो गया। अब (तुम) दोनों रेशमी वस्त्रों को धारण करो। (शकुन्तला उठकर पहनती है।)

गौतमी– बेटी, आनन्द से उमड़े हुए आँसुओं को बहानेवाले नेत्रों से तुम्हें गले से लगाते हुए तेरे पिता यहाँ उपस्थित हैं, अतः शिष्टाचार पूरा करो।

शकुन्तला– (लज्जापूर्वक) पिता जी, प्रणाम कर रही हूँ।

शब्दार्थ– हला - हे सखि, **अवसितमण्डना -** समाप्त मण्डनवाली, जिसका शृङ्गार पूरा हो गया है, **परिधत्स्व -** पहनो, धारण करो, **साम्प्रतम् -** अब, **क्षौमयुगलम् -** दोनों रेशमी वस्त्रों को, **आनन्दपरिवाहिणा -** आनन्द से (उमड़े हुए आँसुओं को) बहानेवाले, **परिष्वजमानः -** गले लगाते हुए या आलिङ्गन करते हुए। **आचारम् -** शिष्टाचार को, **प्रतिपद्यस्व -** सम्पन्न करो। **सव्रीडम् -** लज्जापूर्वक।

विशेष– आचारं प्रतिपद्यस्व - पिता आदि गुरुजनों के आ जाने पर उठकर अगवानी करना, उन्हें प्रणाम करना तथा योग्य आसन पर बैठाना आदि आचार कहा गया है। इसी आचार को सम्पन्न करने के लिए गौतमी शकुन्तला से कह रही है।

काश्यपः - वत्से–

ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।
सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पूरुमवाप्नुहि॥7॥

गौतमी– भगवन्, वरः खल्वेषः। नाशीः।

काश्यपः - वत्से, इतः सद्योहुतानग्नीन् प्रदक्षिणीकुरुष्व।

(सर्वे परिक्रामन्ति।)

काश्यप - पुत्री,

शर्मिष्ठा ययाति की (जैसे अतिप्रिय रानी थी उसी) तरह (तुम भी) पति की अत्यन्त प्रिया बनो। उस (शर्मिष्ठा) ने जैसे (सम्राट् पुत्र) पुरु को (प्राप्त किया), (उसी प्रकार) तुम भी सम्राट् पुत्र को प्राप्त करो।।7।।

गौतमी - भगवन्; निश्चय ही यह वर है, केवल आशीर्वाद नहीं।

काश्यप - पुत्री, इधर अभी हवन की गयी अग्नियों की प्रदक्षिणा करो।

(सभी प्रदक्षिणा करते हैं।)

अन्वय–शर्मिष्ठा, ययातेः, इव; भर्तुः, बहुमता, भव; सा, पूरुम्, इव; त्वम्, अपि, सम्राजम्, सुतम्, अवाप्नुहि।।7।।

शब्दार्थ– शमिष्ठा - शर्मिष्ठा, **ययातेः -** ययाति की, **इव -** तरह, **भर्तुः -** पति की, **बहुमता -** अत्यन्त प्रिया, **भव -** बनो, **सा-** वह, **पूरुम् -** पुरु को, **इव -** जैसे, **त्वम् -** तुम, **अपि-** भी, **सम्राजम् -** सम्राट्, **सुतम् -** पुत्र को, **अवाप्नुहि -** प्राप्त करो।।7।।

विशेष– ययातेः इव - ययाति नहुष का पुत्र था। उसने शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से विवाह किया। दैत्यों के राजा वृषपर्वा की पुत्री शर्मिष्ठा दासी के रूप में देवयानी के साथ गयी। इसका कारण यह था कि शर्मिष्ठा ने किसी समय देवयानी का अपमान किया था। इसी अपमान की क्षतिपूर्ति के लिए शर्मिष्ठा को देवयानी की सेविका बनना पड़ा, परन्तु ययाति इस दासी के सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया और उसने इससे गान्धर्व विवाह कर लिया। इस बात से खिन्न होकर देवयानी अपने पिता के पास चली गयी। शुक्राचार्य ने ययाति को शाप दिया कि वह शीघ्र असमय में ही वृद्ध हो जाय। ययाति ने जब बहुत अनुनय-विनय किया, तब प्रसन्न होकर शुक्राचार्य ने ययाति को अनुमति दे दी कि वह अपने बुढ़ापे को जिस किसी को दे सकता है, यदि वह लेना स्वीकार करे तो। उसने अपने पाँचों पुत्रों से पूछा, किन्तु सबसे छोटे पुत्र को छोड़कर किसी ने भी बुढ़ापा लेना स्वीकार नहीं किया। फलस्वरूप ययाति ने अपना बुढ़ापा पुरु को देकर उसकी युवावस्था ले ली। अन्त में ययाति ने पुरु को राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। पुरु शर्मिष्ठा का बेटा था।

उपमा अलङ्कार, अनुष्टुप् छन्द।

काश्यपः– (ऋक्छन्दसाऽऽशास्ते।) वत्से,

अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः
समिद्धन्तः प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः।
अपघ्नन्तो दुरितं हव्यगन्धै–

वैतानास्त्वां वह्नयः पावयन्तु॥8॥
प्रतिष्ठस्वेदानीम्। (सदृष्टिक्षेपम्) क्व ते शार्ङ्गरवमिश्राः।

काश्यप - (ऋग्वेद के छन्द में बने श्लोक से आशीर्वाद देते हैं) पुत्री,

समिधाओं से प्रज्वलित, वेदी के चारों ओर प्रतिष्ठित, किनारे पर बिछाये गये कुशों से युक्त ये यज्ञीय अग्नियाँ हवन की गयी वस्तुओं की सुगन्ध से पाप को विनष्ट करती हुई तुझे पवित्र करें।।8।।

अब प्रस्थान करो। (इधर-उधर दृष्टि डालकर) कहाँ हैं शार्ङ्गरव आदि?

अन्वय - समिद्धन्तः, वेदिम्, परितः, क्लृप्तधिष्ण्याः, प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः, वैतानाः, अमी, वह्नयः, हव्यगन्धैः, दुरितम्, अपघ्नन्तः, त्वाम्, पावयन्तु।।8।।

शब्दार्थ– समिद्धन्तः - समिधाओं से प्रज्वलित, **वेदिम् -** वेदी के, **परितः -** चारों ओर, **क्लृप्तधिष्ण्याः -** प्रतिष्ठित, **प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः -** किनारे पर बिछाये गये कुशों से युक्त, **वैतानाः -** यज्ञीय, **अमी -** ये, **वह्नयः -** अग्नियाँ, **हव्यगन्धैः -** हवन की गयी वस्तुओं की सुगन्ध से, **दुरितम् -** पाप को, **अपघ्नन्तः -** विनष्ट करती हुई, **त्वाम् -** तुझे, **पावयन्तु -** पवित्र करें।।8।।

विशेष– क्लृप्तधिष्ण्याः - वेदी में तीन अग्नियों की स्थापना की जाती है। इन तीन अग्नियों के नाम हैं (1) गार्हपत्य (2) दक्षिण और (3) आहवनीय। इनमें गार्हपत्य अग्नि वेदी के पश्चिम हिस्से में, दक्षिण अग्नि वेदी के दक्षिण-पश्चिम कोने में तथा आहवनीय अग्नि वेदी के पूर्व हिस्से में स्थापित होती है।

संस्तीर्णदर्भाः– वेदी के चारों ओर कुशा बिछायी जाती है।

परिकर अलङ्कार, वैदिक त्रिष्टुप् छन्द।

(प्रविश्य)

शिष्यः - भगवन्, इमे स्मः।
काश्यपः - भगिन्यास्ते मार्गमादेशय।
शार्ङ्गरवः - इत इतो भवती। (सर्वे परिक्रामन्ति।)
काश्यपः - भो भोः संनिहितास्तपोवनतरवः।

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं युष्मास्वपीतेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनाऽपि भवतां स्नेहेन या पल्लवम्।
आद्ये वः कुसुमप्रसूतिसमये यस्या भवत्युत्सवः
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं सर्वैरनुज्ञायताम्॥9॥

(प्रवेश करके)

शिष्य - भगवन्, यह हम लोग हैं।

काश्यप - अपनी बहन (शकुन्तला) को मार्ग बतलाओ।

शार्ङ्गरव - आप इधर से, इधर से चलें। (सभी घूमते हैं।)

काश्यप - हे हे समीपस्थ तपोवन के तरुओ !

आप लोगों को बिना जल पिलाये जो पहले जल पीने के लिए प्रयास नहीं करती थी (अर्थात् जल नहीं पीती थी), आभूषणप्रिय होते हुए भी जो आप लोगों पर स्नेह के कारण नवीन पत्तों को नहीं तोड़ती थी, आप लोगों के प्रथम फूल निकलने के समय पर जिसका उत्सव होता था, वही यह शकुन्तला पतिगृह जा रही है, सभी लोग अनुमति दें।।9।।

अन्वय–युष्मासु, अपीतेषु, या प्रथमम्, जलम्, पातुम्, न व्यवस्यति, प्रियमण्डना, अपि, या, भवताम्, स्नेहेन, पल्लवम्, न, आदत्ते; वः, आद्ये, कुसुमप्रसूतिसमये, यस्याः, उत्सवः, भवति, सा, इयम्, शकुन्तला, पतिगृहम्, याति, सर्वैः, अनुज्ञायताम्।।9।।

शब्दार्थ - युष्मासु - तुम लोगों को, आप लोगों को, **अपीतेषु -** बिना जल पिलाये, **या -** जो, **प्रथमम् -** पहले, **जलम् -**

जल, **पातुम् -** पीने के लिए, **न -** नहीं, **व्यवस्यति -** प्रयास करती थी, **प्रियमण्डना -** आभूषणप्रिय होते हुए, **अपि -** भी, **या -** जो, **भवताम् -** आप लोगों पर, **स्नेहेन -** स्नेह के कारण, **पल्लवम् -** नवीन पत्तों को, **न -** नहीं, **आदत्ते -** तोड़ती थी, **वः-** आप लोगों के, **आद्ये-** प्रथम, **कुसुमप्रसूतिसमये -** फूल निकलने के समय पर, **यस्याः -** जिसका, **उत्सवः -** उत्सव, **भवति -** होता था, **सा -** वही, **इयम् -** यह, **शकुन्तला -** शकुन्तला, **पतिगृहम् -** पतिगृह, ससुराल, **याति -** जा रही है, **सर्वैः -** सभी लोग, **अनुज्ञायताम् -** अनुमति दें।।9।।

विशेष– प्रथमम् - शकुन्तला प्रातःकाल उठकर अपने दैनन्दिन कार्यों से निवृत्त होकर पहले आश्रम के वृक्षों को सींचती थी। उसके बाद ही स्वयं जल पीती थी। वृक्षों को बिना सींचे वह कभी जल न पीती थी।

उत्सवः - वृक्षों में पहले-पहल पुष्प निकलने पर शकुन्तला प्रसन्न होकर उत्सव मनाती थी।

काव्यलिङ्ग, समासोक्ति अलङ्कार, शार्दूलविक्रीडित छन्द।

(कोकिलरवं सूचयित्वा)

अनुमतगमना शकुन्तला
तरुभिरियं वनवासबन्धुभिः।
परभृतविरुतं कलं यथा
प्रतिवचनीकृतमेभिरीदृशम्॥10॥

(कोयल की कूक के सुनने का अभिनय करके)

यह शकुन्तला वनवास के साथी वृक्षों के द्वारा जाने की अनुमति पा गयी, क्योंकि मनोहर कोकिल की कूक को इन्होंने इस प्रकार (अपना) प्रत्युत्तर बनाया है।।10।।

अन्वय–इयम्, शकुन्तला, वनवासबन्धुभिः, तरुभिः, अनुमतगमना; यथा, कलम्, परभृतविरुतम्, एभिः ईदृशम्, प्रतिवचनीकृतम्।।10।।

शब्दार्थ– इयम् - यह, **शकुन्तला-** शकुन्तला, कण्वपुत्री, **वनवासबन्धुभिः -** वनवास के साथी, **तरुभिः -** वृक्षों के द्वारा, **अनुमतगमना -** जाने की अनुमति पा गयी, **यथा -** जैसे कि, क्योंकि, **कलम् -** मनोहर, **परभृतविरुतम् -** कोकिल की कूक को, **एभिः -** इन्होंने, **ईदृशम् -** इस प्रकार, **प्रतिवचनीकृतम् -** (अपना) प्रत्युत्तर बनाया है।।10।।

विशेष– परभृतविरुतम्– यात्रा के समय कोकिल का कूजन मङ्गलसूचक माना गया है। स्वजन भी यात्रा के प्रारम्भ में मङ्गल वचन बोलते हैं। मङ्गल वचन सुनकर व्यक्ति यात्रा आदि कार्य प्रारम्भ करते हैं। वृक्ष शकुन्तला के स्वजन हैं, अतः उन्होंने कोयल की आवाज के बहाने शकुन्तला को प्रस्थान करने की अनुमति प्रदान की है।

परभृत– कोयल अपने छोटे बच्चों को कौवे के घोंसले में रख देती है। मूर्ख कौवा रङ्ग की समानता के कारण कोयल के बच्चे को अपना बच्चा समझकर पालता-पोसता है। बड़ा होने पर कोयल का बच्चा उड़कर अपनी जाति के साथ जाकर मिल जाता है। यही कारण है कि कोयल को **पर -** दूसरे के द्वारा **भृत -** पाला-पोसा गया कहा जाता है।

परिणाम अलङ्कार, अपवक्त्र छन्द।

●●

सूक्तिपरक वाक्यों की संदर्भ सहित व्याख्या

1. गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया।

सन्दर्भ – प्रस्तुत सूक्ति महाकवि कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या– शकुन्तला के साथ गान्धर्व विवाह के पश्चात् दुष्यन्त हस्तिनापुर चला गया। प्रियंवदा चिन्तित है कि पिता कण्व प्रवास से लौटने के बाद इस विवाह से प्रसन्न होंगे अथवा नहीं। अनसूया का कहना है कि तात काश्यप इससे प्रसन्न होंगे, क्योंकि ऐसा गुणवान् व्यक्ति उन्हें घर-बैठे ही मिल गया है और गुणवान् व्यक्ति को ही कन्या देनी चाहिए।

2. दुःखशीले तपस्विजने कोऽभ्यर्थ्यताम्?

सन्दर्भ–प्रस्तुत सूक्ति महाकवि कालिदास कृत 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – अनसूया चिन्तित है कि यहाँ से जाने के पश्चात् दुष्यन्त ने यहाँ का कोई समाचार जानने का प्रयास नहीं किया। वह सोचती है कि यदि किसी सन्देशवाहक से पता लगाया जाय, तो यहाँ से किसे भेजा जाय। यहाँ के तपस्वी भला प्रेम-प्रसंग को क्या जानें। इसलिए इन चिड़चिड़े, तपस्वियों में से किससे प्रार्थना की जाय, समझ में नहीं आता।

3. न तादृशा आकृतिविशेषा गुणविरोधिनो भवन्ति।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – अनसूया की चिन्ता का समाधान करती हुई प्रियंवदा कहती है कि ''विश्वास रखो। राजा दुष्यन्त की जैसी सुन्दर आकृति है ऐसी आकृतियाँ कभी गुण विरोधिनी नहीं होती हैं क्योंकि 'यत्राकृति तत्र गुणा वसन्ति' ऐसा भी कहा जाता है।'' इस प्रकार राजा भव्याकृति है और वह शकुन्तला को भुला नहीं सकता।

4. कोऽन्यो हुतवहाद् दुग्धुं प्रभवति।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – ऋषि दुर्वासा लौटते समय कुपित होकर शकुन्तला को शाप दे देते हैं, तब घबरायी हुई प्रियंवदा कहती है कि अग्नि के अतिरिक्त भला कौन जला सकता है! प्रियंवदा का मानना है, जिस प्रकार जलाना अग्नि का सहज गुण है, उसी प्रकार एकदम क्रोध आना और शाप देना दुर्वासा ऋषि का स्वभाव है। अतः ये निश्चित ही दुर्वासा हैं।

5. को नाम उष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति?

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – प्रियंवदा से अनसूया कहती है कि दुर्वासा के शाप का वृत्तान्त वह शकुन्तला को न बताये। प्रियंवदा कहती है कि ऐसा कौन व्यक्ति है जो गर्म जल से नवमालिका को सींचे। भाव यह है कि नवमालिका बहुत कोमल लता होती है, उसे यदि गर्म जल से सींचा जाये तो वह मुरझा जाती है। शकुन्तला भी स्वभाव से कोमल है, यदि उसे शाप की बात बतायी जायेगी तो उसकी वही दशा होगी जो गर्म जल से सींचने पर नवमालिका की होती है।

6. तेजो द्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां,

अथवा लोको नियम्यत इवात्मदशान्तरेषु।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – समय का पता लगाने के लिए महर्षि काश्यप का एक शिष्य कुटिया से बाहर आता है। वह देखता

है कि प्रभात हो गया। एक ओर चन्द्रमा छिप रहा है, तो दूसरी ओर सूर्य का उदय हो रहा है। इस प्रकार दो तेजस्वी पदार्थ एक ही समय में अस्त और उदय होकर अपनी विशेष दशाओं में मानो संसार को नियमित कर रहे हैं। संसार में दुःख-सुख का कोई नियम नहीं। यहाँ एक ही समय में एक दुःखी तो दूसरा सुखी, रहता है। सुख के बाद दुःख और दुःख के बाद सुख आता रहता है। इससे शकुन्तला के भावी दुःख की व्यंजना होती है।

7. दिष्ट्या धूमाकुलितदृष्टेरपि यजमानस्य पावक एव आहुतिः पतिता।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – अनसूया को प्रियंवदा बताती है कि तीर्थयात्रा से वापस आने पर तात काश्यप ने शकुन्तला से कहा था कि पुत्री! यह बहुत शुभ है कि यजमान की दृष्टि धुएँ से व्याकुल होने पर भी आहुति अग्नि में ही पड़ी। महर्षि का तात्पर्य यह है कि यदि यज्ञ करनेवाले की दृष्टि धुएँ से व्याकुल होने पर भी आहुति अग्नि में ही पड़े तो सौभाग्य की बात है। इसी प्रकार कोई युवती कामातुर होने पर किसी अयोग्य पुरुष से भी प्रेम कर सकती है। किन्तु शकुन्तला ने कामुक होकर भी दुष्यन्त जैसे योग्य राजा को पति बनाया, यह उसके लिए सौभाग्य की बात है।

8. वत्से! सुशिष्यपरिदत्ता विद्येव अशोचनीया संवृत्ता।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – यह काश्यप ऋषि की प्रियंवदा द्वारा पुनरुक्ति है। महर्षि ने दुष्यन्त और शकुन्तला के विवाह के बाद कहा था कि तुम सुयोग्य शिष्य को दी गयी विद्या के समान अशोचनीय हो गयी हो। उनका तात्पर्य यह है कि कुशिष्य विद्या का दुरुपयोग करता है इसलिए कुशिष्य को दी गयी विद्या शोक का कारण हो जाती है। किन्तु सुयोग्य शिष्य को दी गयी विद्या सफल होती है, उसके विषय में कभी शोक नहीं होता। इस प्रकार सुयोग्य वर को दी गयी कन्या शकुन्तला के विषय में भी चिन्ता करने की कोई बात नहीं।

9. पीड्यन्ते गृहिणः कथं न तनया विश्लेषदुःखैर्नवैः।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – काश्यप ऋषि शकुन्तला के वियोग की आशंका में दुःखी हैं तथा वे कहते हैं कि जब हम जैसे वनवासी तपस्वी भी अपनी पुत्री के वियोग में इस प्रकार दुःखी होते हैं तब गृहस्थ लोग पुत्री के वियोग के दुःख में अधिक पीड़ित क्यों न होंगे।

10. इष्ट प्रवासजनितान्यबलाजनस्य,
दुःखानिनूनमतिमात्रसुदुःसहानि।।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति नाटककार एवं महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत सूक्ति में कवि प्रकृति के माध्यम से मनोवैज्ञानिक तरीके से प्रवास जाने से उत्पन्न वियोग के दुःख का प्रातःकाल की बेला में शिष्य के द्वारा चित्रण करा रहा है।

हिन्दी अनुवाद – निश्चय ही स्त्रीजनों को प्रियजन के प्रवास से उत्पन्न दुःख अत्यन्त असहनीय होते हैं।

हिन्दी व्याख्या – महाकवि कालिदास वस्तुस्थिति का यथावत् वर्णन करने में सिद्ध हस्त हैं। यहाँ पर सोकर उठे हुए कण्व-शिष्य ने प्रातःकाल में चन्द्रमा को अस्त होते हुए देखा एवं कुमुदनी ने भी अपनी सुन्दरतम् आभा को समेटे हुए देखा है। कुमुदनी को प्रकाशित करने वाला चन्द्रमा मानो उसका प्रियजन है। उसके प्रवास में जाने से कुमुदनी मुरझा गयी है। वस्तुतः प्राकृतिक निर्जीव पदार्थों का स्वभाव है कि वे भी संयोग वियोग की संवेदना को अपनी प्रक्रिया से अभिव्यक्त कर देते हैं। इन्हें भी अपने प्रिय के समागम की अपेक्षा बनी रहती है।

वस्तुतः जब कुमुदनी की चन्द्रमा के अस्त हो जाने पर यह दशा हो जाती है। इसी प्रकार निश्चय ही स्त्रीजनों का

प्रियजन के प्रवास से उत्पन्न दुःख अत्यन्त असहनीय एवं कान्ति हीन हो जाता है। इसी प्रकार शकुन्तला की भी स्थिति दुष्यन्त के बिना ऐसी ही हो गयी है।

11. चित्रकर्म परिचयेनाङ्गेषु ते आभरण विनियोग कुर्वः।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति नाटककार एवं महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत अभिकथन शकुन्तला की दोनों सखियों द्वारा किया जा रहा है। वन में वृक्षों के अनुग्रह से शकुन्तला को अलंकृत करने के लिए प्राकृतिक आभूषण उपलब्ध करा दिये गये हैं। आश्रमवासी तपस्वी सदा अध्ययन में निरत रहने वाले हैं। वहाँ आभूषणों के माध्यम से कोई भी और कभी अपने को सजाता-संभारता नहीं है। इसलिए प्राप्त आभूषणों का उपयोग किन अंगों पर कैसे किया जाये का सजीव एवं सहज चित्रण किया गया है।

हिन्दी अनुवाद – चित्रों में जैसा अलंकरण देखा है उससे परिचित होने से तुम्हारे अंगों पर आभूषण पहनाती हैं।

हिन्दी व्याख्या – प्रस्तुत अभिकथन का आशय कवि तद्कालीन आश्रम निवासियों के सरलतम जीवन-शैली का स्वाभाविक एवं सहज चित्रण कर रहा है। गुरु और शिष्य एवं शिष्यायें आश्रम में रहते हुए सांसारिक भोग-विलासिताओं की वस्तुओं एवं साधनों से सर्वथा अपरिचित हैं। यथा– शकुन्तला के लिए वनदेवता ने वृक्षों के अनुग्रह से आभूषण उपलब्ध करा दिये हैं। परन्तु पूर्व में उनका प्रयोग कभी नहीं किया और न किसी नगरीय जन को करते देखा है। इसलिए अब वे सखियाँ शकुन्तला को चित्रों में देख-देखकर ही आभूषण अनुकूल अंगों में पहनाती हैं।

12. अनुपयुक्तभूषणोऽयं जनः।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति नाटककार एवं महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से उद्धृत है।

प्रसंग– प्रस्तुत सूक्ति में आश्रम से पतिगृह जाने से पूर्व शकुन्तला को विभिन्न प्रकार के आभूषणों से सुसज्जित किया जा रहा है। दोनों सखियाँ शकुन्तला को आभूषण धारण कराते हुए कहती हैं कि–

हिन्दी अनुवाद – हम दोनों आभूषणों के उपयोग से अनभिज्ञ हैं अर्थात् आभूषणों का उपयोग नहीं किया गया है।

हिन्दी व्याख्या – इस प्रकार शकुन्तला की सखियाँ (अनसूया और प्रियंवदा) शकुन्तला को विदा करते हुए विभिन्न प्रकार के आभूषण पहना रही हैं। अनभिज्ञ होने के कारण वे पुनः चित्रावली को देखते हुए विभिन्न अंगों पर आभूषण पहनाती हैं।

13. स्मरिष्यति त्वां न स बोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कृतामिव।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

हिन्दी व्याख्या – आश्रम-द्वार पर उपस्थित हुए दुर्वासा का स्वागत शकुन्तला नहीं करती, क्योंकि दुष्यन्त के ध्यान में तल्लीन उसे दुर्वासा के आगमन का पता ही नहीं चला। क्रोध में दुर्वासा शकुन्तला को शाप दे देते हैं जिसके ध्यान में डूबी हुई तुम द्वार पर उपस्थित अतिथि को भी नहीं देख रही, वह तुम्हें उसी प्रकार स्मरण नहीं करेगा जैसे कोई पागल आदमी पहले की गयी बात को भूल जाता है।

14. आभरणोचितं रूपमाश्रमसुलभैः प्रसाधनैविप्रकार्यते।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति नाटककार एवं महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

प्रसंग– शकुन्तला आश्रम से विदा होकर पति परिवार को प्रस्थान करने के लिए सखियों के द्वारा तैयार की जा रही है। विदाई के अवशोषित आभूषणों, वस्त्रों आदि से सजाई जा रही है। परन्तु शकुन्तला की स्वाभाविक सुन्दरता इतनी अत्यधिक है कि अलंकरणों की शोभा भी उसके सामने फीकी पड़ रही है। शकुन्तला की सखी प्रियंवदा ऐसा अभिव्यक्त कर रही है–

हिन्दी अनुवाद – आभूषणों के योग्य रूप आश्रम में प्राप्त अलंकारों से विकृत किया जा रहा है।

हिन्दी व्याख्या – यह स्वाभाविक है कि शकुन्तला आश्रम में रहने वाली तपस्विनी की भाँति जीवन जीने वाली ऋषि पुत्री है। उसके पितृ परिवार से पति परिवार की ओर प्रस्थान करने के अवसर के अनुकूल सभी जन उपस्थित हैं। अपनी-अपनी योग्यतानुसार विदाई से सम्बन्धित कार्यों में लगे हैं। सखियाँ सुसज्जित करने में व्यस्त हैं। परन्तु दुःख है कि पति पक्ष की ओर से विदाई की कोई पहल नहीं है। आभूषणों का अभाव है, आश्रमवासियों के पास कीमती आभूषणों का होना सर्वथा असम्भव है। ऐसी स्थिति में प्रियंवदा दुःखी होकर कह रही है कि शकुन्तला के रूप-सौन्दर्य के अनुकूल आश्रम में उपलब्ध अलंकार नहीं हैं। ये आभूषण तो शकुन्तला की सुन्दरता बढ़ाने के बजाय और घटा रहे हैं। वास्तविकता यही है कि महिलायें सदा आभूषणप्रिय होती हैं। ऐसे अवसर पर आभूषणों का अभाव उनके मन में हीनता एवं दयनीयता को जन्म देता है। गौरव और शोभा को बढ़ाने के लिए आभूषणों की अपेक्षा होना स्वाभाविक ही है। इसका चित्रण महाकवि ने सहज शब्दों में किया है जो मनोवैज्ञानिक एवं सहज स्वभाव है।

15. रक्षितव्या खलु प्रकृतिपेलवा प्रियसखी।

सन्दर्भ– प्रस्तुत सूक्ति नाटककार एवं महाकवि कालिदास द्वारा रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अंक से अवतरित है।

प्रसंग– प्रस्तुत सूक्तिपरक वाक्य में अनसूया शकुन्तला के शाप से सम्बन्धित समाचार को अपने तक सीमित रखने के लिए प्रियंवदा से निवेदन कर रही है।

हिन्दी अनुवाद – निश्चय ही स्वभाव से कोमल प्रियसखी (शकुन्तला) की रक्षा करनी चाहिए।

हिन्दी व्याख्या – इस प्रकार अनसूया का कहने का आशय अपने आप में इसलिए यथोचित है कि शकुन्तला जब अपने पति के वियोग जनित शोक में पूर्णरूपेण डूबी हुई है। उसे स्वयं अपना ही ध्यान नहीं है तो वह किसी दूसरे अभ्यागत का क्या ध्यान रख सकती है? इसलिए ऐसे समय में हम दोनों (अनसूया और प्रियंवदा) को यह शाप वृत्तान्त अपने तक ही सीमित रखना चाहिए। अन्यथा वह (शकुन्तला) जानकर और भी दुःखी होगी। जो कि हम दोनों के लिए चिन्ता का विषय हो जायेगा। यह सोचना स्वाभाविक रूप से सखियों का धर्म होता है।

16. अवेहि तनयां ब्रह्मन्नग्निगर्भां शमीमिव।

सन्दर्भ–प्रस्तुत सूक्ति कालिदास विरचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क से ली गयी है।

हिन्दी व्याख्या–प्रियंवदा अनसूया से कहती है कि महर्षि कण्व को शकुन्तला विषयक ज्ञान आकाशवाणी से इस प्रकार हुआ है–"हे ब्रह्मन्! पृथ्वी के कल्याण हेतु दुष्यन्त द्वारा स्थापित वीर्य को धारण करती हुई पुत्री शकुन्तला को तुम अग्नि धारण करनेवाले शमी वृक्ष की भाँति समझो।"

17. ननूटजसन्निहिता शकुन्तला।

सन्दर्भ–प्रस्तुत सूक्ति हमारी पाठ्य-पुस्तक 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के चतुर्थ अङ्क से ली गयी है। इसके रचयिता महाकवि कालिदास हैं।

हिन्दी व्याख्या–'अयमहम् भोः।' महर्षि दुर्वासा के इस नेपथ्य कथन को सुनकर अनसूया एवं प्रियंवदा उसे ध्यान से सुनकर आपस में वार्त्तालाप करती हुई मञ्च से निकल जाती हैं। अनसूया ध्यान केन्द्रित कर सुनती है तथा प्रियंवदा से कहती है कि हे सखि! यह आवाज तो किसी अतिथि-जैसी प्रतीत होती है। इस पर प्रियंवदा उत्तर देती है कि हे सखि, अतिथि आये हैं तो ठीक है, कोई चिन्ता की बात नहीं है क्योंकि निश्चय ही कुटिया में अतिथि सत्कारार्थ शकुन्तला मौजूद है। इसके तुरन्त बाद ही वह सोचती है कि अरे! शकुन्तला तो शरीर से ही कुटिया में स्थित है, लेकिन उसका हृदय तो हस्तिनापुर में है। बेचारी शून्य हृदय से वहाँ बैठी है। इस प्रकार उसके पर्णशाला में रहने या न रहने से तो कोई लाभ नहीं है।

●●

➨ अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. शकुन्तलायाः सख्यौ के आस्ताम्?
उत्तर– शकुन्तलायाः सख्यौ अनसूया, प्रियंवदा आस्ताम्।

प्रश्न 2. पर्णकुटी स्थिता शकुन्तला केन शप्ता?
उत्तर– पर्णकुटी स्थिता शकुन्तला दुर्वाससा शप्ता।

प्रश्न 3. दुर्वासा स्वभावेन कीदृशः महर्षिः आसीत्?
उत्तर– दुर्वासा स्वभावेन क्रोधी महर्षिः आसीत्।

प्रश्न 4. ओषधीनां पतिः एकतः कुत्र यति?
उत्तर– ओषधीनां पतिः एकतः अस्तशिखरं यति।

प्रश्न 5. कन्या कस्मै दातव्यम्?
उत्तर– कन्या गुणवते दातव्यम्।

प्रश्न 6. शकुन्तला हृदयेन कुत्र स्थिता?
उत्तर– शकुन्तला हृदयेन राजा दुष्यन्त ध्याने स्थिता।

प्रश्न 7. का पुष्पोच्चयं रूपयति?
उत्तर– अनसूया पुष्पोच्चयं रूपयति।

प्रश्न 8. शकुन्तला कीदृशी अस्ति?
उत्तर– शकुन्तला प्रकृतिपेलवा अस्ति।

प्रश्न 9. कस्याः सुखमञ्जनं भवतु?
उत्तर– शकुन्तलायाः सुखमञ्जनं भवतु।

प्रश्न 10. दुष्यन्तः कः आसीत्?
उत्तर– दुष्यन्तः हस्तिनापुर राजा आसीत्।

प्रश्न 11. 'आः अतिथिपरिभाविनि।' इति केन उक्तम्?
उत्तर– 'आः अतिथिपरिभाविनि' इति दुर्वासामुनिना उक्तम्।

प्रश्न 12. शकुन्तलया सह हस्तिनापुरं कां गता?
उत्तर– शकुन्तलया सह हस्तिनापुरं गौतमी गता।

प्रश्न 13. प्रियंवदा का आसीत्।
उत्तर– प्रियंवदा शकुन्तलायाः प्रियसखी आसीत्।

प्रश्न 14. कस्य वचनं अन्यथां भवितुं न अर्हति?
उत्तर– दुर्वाससः अन्यथा वचनं न अर्हति।

प्रश्न 15. राजलक्ष्मीः कया अनुभवितव्याः?
उत्तर– राजलक्ष्मीः शकुन्तलया अनुभवितव्याः।

प्रश्न 16. अद्य का यास्यति?
उत्तर– अद्य शकुन्तला यास्यति।

प्रश्न 17. तनयाविश्लेषदुःखैः नवैः के पीड्यन्ते?
उत्तर– तनयाविश्लेषदुःखैः नवैः गृहिणः पीड्यन्ते।

प्रश्न 18. अभिज्ञानशाकुन्तलम् केन विरचितम्?
उत्तर– अभिज्ञानशाकुन्तलम् कालिदासेन विरचितम्।

प्रश्न 19. पाठ्यक्रमे कः अङ्कः निर्धारितः?
उत्तर– पाठ्यक्रमे चतुर्थ अङ्कः निर्धारितः?
प्रश्न 20. नाटकेषु किं रम्यम्?
उत्तर– नाटकेषु 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' रम्यम्।
प्रश्न 21. अनसूया केसरमालिका कुत्र निक्षिप्ता?
उत्तर– अनसूया केसरमालिका नालिके रसमुद्गके निक्षिप्ता।
प्रश्न 22. सूर्योदये एव का शिखामज्जिता?
उत्तर– सूर्योदये एव शकुन्तला शिखामज्जिता।
प्रश्न 23. अलङ्करणानि कुतः प्राप्तानि?
उत्तर– अलङ्करणानि तातकाश्यपप्रभावात् प्राप्तानि।
प्रश्न 24. महर्षेः दुर्वाससः आगमनकाले शकुन्तला कुत्र सन्निहिता आसीत्।
उत्तर– महर्षेः दुर्वासा आगमनकाले शकुन्तला उटजे सन्निहिता आसीत्।
प्रश्न 25. शकुन्तला का आसीत्?
उत्तर– शकुन्तला मेनका विश्वामित्रयोः कन्या आसीत्।
प्रश्न 26. के गुणविरोधिनो न भवन्ति?
उत्तर– आकृतिविशेषाः गुणविरोधिनो न भवन्ति।
प्रश्न 27. शकुन्तला को न स्मरिष्यति?
उत्तर– शकुन्तला यस्मिन् ध्यानमग्ना सः एव (दुष्यन्तः) तां न स्मरिष्यति।
प्रश्न 28. सम्प्रस्थितेन राज्ञा शकुन्तला किम् पिनद्धम्?
उत्तर– सम्प्रस्थितेन राज्ञा शकुन्तला स्वनामधेयांकितम् अंगुलीयकम् पिनद्धम्।
प्रश्न 29. आश्रमवृक्षैः शकुन्तलायै किं दत्तम्?
उत्तर– केनचित् मांगल्यं क्षौमम् केनचित् लाक्षारसः निष्ठ्यूतः अन्यैः आभरणानि दत्तानि।
प्रश्न 30. दुष्यन्तनामाङ्कितं किमाभरणम् शकुन्तला पार्श्वे आसीत्।
उत्तर– दुष्यन्तनामाङ्कितं अङ्गुलीयकं शकुन्तला पार्श्वे आसीत्।
प्रश्न 31. धूमाकुलितदृष्टेः यजमानस्य आहुतिः कुत्र पतिता?
उत्तर– धूमाकुलितदृष्टेः यजमानस्य आहुतिः पावके एव पतिता।
प्रश्न 32. सुशिष्यदत्ता विद्या इव का?
उत्तर– सुशिष्यदत्ता विद्या इव शकुन्तला।
प्रश्न 33. अग्निगर्भा शमीव का?
उत्तर– अग्निगर्भा शमीव शकुन्तला।
प्रश्न 34. शकुन्तला कुत्र स्थिता?
उत्तर– शकुन्तला उटजसन्निहिता स्थिता।
प्रश्न 35. 'गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया' इति कस्योक्तिः?
उत्तर– 'गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया' इति अनसूयायाः उक्तिः।
प्रश्न 36. कः महर्षिः सुलभकोपः आसीत्।
उत्तर– दुर्वासा महर्षिः सुलभकोपः आसीत्।
प्रश्न 37. शकुन्तलायाः सख्यौ मङ्गलसमालम्भनं कां विरचयतः?
उत्तर– शकुन्तलायाः सख्यौ मङ्गलसमालम्भनं शकुन्तलाम् विरचयतः।
प्रश्न 38. 'कोऽन्यः हुत वहाद् दग्धुं प्रभवति' इति केनोक्तम्?
उत्तर– 'कोऽन्यः हुत वहाद् दग्धुं प्रभवति' इति प्रियंवदया उक्तम्।

प्रश्न 39. केनचित् तरुणा चरणोपभोगसुलभः कः निष्ठ्यूतः।
उत्तर– केनचित् तरुणा चरणोपभोगसुलभः लाक्षारसः निष्ठ्यूतः।
प्रश्न 40. काश्यपेन कः आशिषः दत्तः?
उत्तर– काश्यपेन सम्राजं सुतमवाप्नुहि इत्याशिषः दत्तः।
प्रश्न 41. शकुन्तलया पुत्रकृतकः कः स्वीकृतः आसीत्?
उत्तर– शकुन्तलया पुत्रकृतकः मृगः आसीत्।
प्रश्न 42. वेलोपलक्षणार्थं शिष्यः केनोपदिष्टः आसीत्?
उत्तर– वेलोपलक्षणार्थं शिष्यः प्रवासादुपावृतेन काश्यपेन उपदिष्टः आसीत्।
प्रश्न 43. मङ्गलकाले रोदितुम् उचितानुचितं वा?
उत्तर– मङ्गलकाले रोदितुम् अनुचितम् अस्ति (वा)।
प्रश्न 44. शरीरं विना छन्दोमय्या वाण्या संस्कृतमाश्रित्य किम् उक्तम्?
उत्तर– 'हे ब्रह्मन्! स्वपुत्रीं शकुन्तलां दुष्यन्त तेजो दधानां गर्भवती जानीहि' इति शरीरं बिना छान्दोमय्या वाण्या उक्तम्।
प्रश्न 45. प्रियंवदा शकुन्तलासकाशं कथं गता?
उत्तर– प्रियंवदा शकुन्तलासकाशं सुखशयनपृच्छिका गता।
प्रश्न 46. वामहस्तोपहितवदना का अस्ति।
उत्तर– वामहस्तोपहितवदना शकुन्तला अस्ति।
प्रश्न 47. तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां किं दर्शयते?
उत्तर– तेजोद्वयस्य युगपद् व्यसनोदयाभ्यां लोकः आत्मदशान्तरेषु नियम्यते इव दर्शयते।
प्रश्न 48. वृक्षेषु अपीतेषु शकुन्तला किंकर्तुं न व्यवस्यति?
उत्तर– वृक्षेषु अपीतेषु शकुन्तला जलं पातुं न व्यवस्यति।
प्रश्न 49. प्रियमण्डनापि शकुन्तला स्नेहेन वृक्षाणां किं न आदत्ते।
उत्तर– प्रियमण्डनापि शकुन्तला स्नेहेन वृक्षाणां पल्लवम् न आदत्ते?
प्रश्न 50. शकुन्तलायाः सखीमण्डनं कीदृशं भविष्यति?
उत्तर– शकुन्तलायाः सखीमण्डनं दुर्लभं भविष्यति।
प्रश्न 51. दुर्वासाः शकुन्तलां किं शशाप?
उत्तर– दुर्वासाः शकुन्तलां शशाप– 'स्मरिष्यति त्वां न स प्रबोधितोऽपि सन् कथां प्रमत्तः प्रथमं कथामिव'।
प्रश्न 52. दुर्वाससाः शकुन्तला कस्मात् कारणात् शप्ता?
उत्तर– शकुन्तला दुर्वाससः अतिथि सत्कारं न अकरोत् तेन सा शकुन्तलां शप्ता।
प्रश्न 53. अभिज्ञानभरण दर्शनेन को निवर्तिष्यते।
उत्तर– अभिज्ञानभरण दर्शनेन शापो निवर्तिष्यते।
प्रश्न 54. दुर्वासा किं मन्त्रयन् स्वयमन्तर्हितः?
उत्तर– 'अभिज्ञानाभरण दर्शनेन शापोनिवर्तिष्यते' इति मन्त्रयन् दुर्वासा स्वयमन्तर्हितः।

➡ बहुविकल्पीय प्रश्न

नोट–निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर लिखिए–

1. शकुन्तलां शापं कः अददात्?
अथवा शकुन्तलायै केन शापः दत्तः?
अथवा शकुन्तला केन शप्ताऽभूत्?

(i) कण्वः (ii) गौतमी (iii) दुर्वासाः (iv) विश्वामित्रः
उत्तर– (iii) दुर्वासाः।

2. **शकुन्तलां शापं कः अददात्?**
(i) कण्वः (ii) दुर्वासाः (iii) गौतमी (iv) प्रियंवदा
उत्तर– (ii) दुर्वासाः।

3. **'कोऽन्योहुतवहाद् दग्धुं प्रभवति' – यह कथन किसका है?**
(i) प्रियंवदा (ii) अनसूया (iii) गौतमी (iv) कण्व
उत्तर– (i) प्रियंवदा।

4. **अवसितमण्डना का आसीत्?**
(i) प्रियंवदा (ii) अनसूया (iii) शकुन्तला (iv) गौतमी
उत्तर– (iii) शकुन्तला।

5. **'उपस्थितां होमवेलां गुरवे निवेदयामि' यह वाक्य किसके द्वारा कहा गया है?**
(i) प्रियंवदा (ii) अनसूया (iii) गौतमी (iv) शिष्य
उत्तर– (iv) शिष्य।

6. **निम्न में से कौन-सी रचना कालिदास की है?**
(i) उत्तररामचरितम् (ii) मृच्छकटिकं (iii) मेघदूतं (iv) प्रतिमा नाटकं
उत्तर– (iii) मेघदूतं।

7. **प्रतिपेलवा का?**
(i) प्रियंवदा (ii) गौतमी (iii) शकुन्तला (iv) अनसूया
उत्तर– (iii) शकुन्तला।

8. **कन्या कीदृशोऽर्थः?**
(i) परकीयो (ii) स्वकीयो (iii) पितरौ (iv) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (i) परकीयो।

9. **दुष्यन्तः कस्य राज्यस्य (कुत्रत्यः) राजा आसीत्?**
(i) कोशलस्य (ii) विदर्भस्य (iii) मथुरायाः (iv) हस्तिनापुरस्य
उत्तर– (iv) हस्तिनापुरस्य।

10. **'शिवास्ते पन्थानः सन्तु' यह कथन किसका है?**
(i) गौतमी का (ii) काश्यप का (iii) प्रियंवदा का (iv) अनसूया का
उत्तर– (ii) काश्यप का।

11. **कालिदासस्य प्रसिद्धोऽलङ्कारोऽस्ति–**
(i) अर्थान्तरन्यासः (ii) श्लेषः (iii) उपमा (iv) रूपकम्
उत्तर– (iii) उपमा।

12. **'गुणवते कन्यका प्रतिपादनीया' इस उक्ति का वक्ता है–**
(i) दुष्यन्त (ii) नारद (iii) अनसूया (iv) शकुन्तला
उत्तर– (iii) अनसूया।

13. **'सौभाग्यदेवताऽर्चनीया' वाक्य आया है–**
(i) प्रियंवदा के लिए (ii) शकुन्तला के लिए (iii) अनसूया के लिए (iv) गौतमी के लिए
उत्तर– (ii) शकुन्तला के लिए।

14. ''एष दुर्वासाः सुलभकोपो महर्षिः'' केन कथितम् इदं वाक्यम्?
(i) अनसूयया (ii) गौतम्या (iii) प्रियंवदया (iv) शकुन्तलया
उत्तर– (iii) प्रियंवदया।

15. 'को नामोष्णोदकेन नवमालिकां सिञ्चति' वाक्य की वक्ता है–
(i) प्रियंवदा (ii) अनसूया (iii) गौतमी (iv) मैत्रेयी
उत्तर– (i) प्रियंवदा।

16. कस्मिन् समये शकुन्तलायाः उत्सवः भवति?
(i) कुसुम प्रसूति समये (ii) वर्षाकाले (iii) वसन्तागमने (iv) मृगीप्रसूति समये
उत्तर– (i) कुसुम प्रसूति समये।

17. चतुर्थे अंके कस्य रसस्य निष्पत्तिः अभवत् ?
(i) संयोग श्रृंगारस्य (ii) वियोग श्रृंगारस्य (iii) अद्भुत रसस्य (iv) हास्य रसस्य
उत्तर– (ii) वियोग श्रृंगारस्य।

18. 'सुशिष्यपरिदत्ता विद्येवाशोचनीयासि संवृत्ता' वाक्य किसके लिए कहा गया है–
(i) गौतमी के लिए (ii) प्रियंवदा के लिए (iii) नारद के लिए (iv) शकुन्तला के लिए
उत्तर– (iv) शकुन्तला के लिए।

19. इष्टप्रवासजनितान्यबलाजनस्य दुःखानि नूनमतिमात्रसुदुःसहानि' उक्ति है–
(i) कण्व की (ii) शिष्य की (iii) गौतमी की (iv) अनसूया की
उत्तर– (ii) शिष्य की।

20. प्रियंवदायाः सख्याः किन्नाम् आसीत्?
(i) शकुन्तला (ii) अनसूया (iii) मैत्रेयी (iv) गार्गी
उत्तर– (i) शकुन्तला।

21. 'प्रकृतिवक्र' है–
(i) शारद्वत (ii) शार्ङ्गरव (iii) दुर्वासा (iv) नारद
उत्तर– (iii) दुर्वासा।

22. 'सुलभकोप' हैं–
(i) काश्यप (ii) कण्व (iii) नारद (iv) दुर्वासा
उत्तर– (iv) दुर्वासा।

23. काश्यप को शकुन्तला के विवाह की सूचना किसने दी है–
(i) प्रियंवदा ने (ii) गुरु ने (iii) अशरीरी छन्दोमयी वाणी ने (iv) नारद ने
उत्तर– (iii) अशरीरी छन्दोमयी वाणी ने।

24. पतिगृहं गच्छन्त्या शकुन्तलया सह का गच्छत्?
अथवा महर्षि कण्वेन पति गृहं गच्छन्त्या शकुन्तलया सह का प्रेषिता?
अथवा शकुन्तलया सह हस्तिनापुरं का गता?
(i) अनसूया (ii) प्रियंवदा (iii) गौतमी (iv) वृद्धतापसी
उत्तर– (iii) गौतमी।

25. कुसुम प्रसूति समये कस्याः उत्सवः भवति स्म?
(i) प्रियंवदायाः (ii) अनसूयायाः (iii) शकुन्तलायाः (iv) गौतम्याः
उत्तर– (iii) शकुन्तलायाः।

26. 'वत्से! वीरप्रसविनी भव' यह आशीर्वाद है–

(i) गौतमी का (ii) पहली तापसी का (iii) अनसूया का (iv) तीसरी तापसी का

उत्तर– (iv) तीसरी तापसी का।

27. तृतीय तापसी का आशीर्वाद है–

(i) वत्से! सुखं लभस्व (ii) वत्से! भर्तुर्बहुमता भव (iii) वत्से! वीरप्रसविनी भव (iv) एतेषु न कश्चिदपि

उत्तर– (ii) वत्से! भर्तुर्बहुमता भव।

28. शकुन्तलासाकं राजकुलं का गता।

(अथवा) प्रस्थान काले शकुन्तलया सह गच्छति–

(i) प्रियंवदा (ii) अनसूया (iii) गौतमी (iv) मेनका

उत्तर– (iii) गौतमी।

29. कस्याः प्रस्थानकौतुकं निवर्त्यताम्–

(i) शकुन्तलायाः (ii) अनसूयायाः (iii) प्रियंवदायाः (iv) एतेषु न कश्चिदपि

उत्तर– (i) शकुन्तलायाः।

30. शकुन्तलां कोऽपालयत्?

(अथवा) शकुन्तला कस्य पालिता पुत्री आसीत्?

(i) वशिष्ठः (ii) अगस्त्यः (iii) विश्वामित्रः (iv) कण्वः

उत्तर– (iv) कण्वः।

31. संस्कृतमाश्रित्य पठति–

(i) शकुन्तला (ii) प्रियंवदा (iii) गौतमी (iv) एतेषु न कश्चिदपि

उत्तर– (ii) प्रियंवदा।

32. ''पादयोः प्रणम्य निवर्तयैनं''–किसका कथन है?

(i) शकुन्तला (ii) प्रियंवदा (iii) अनसूया (iv) गौतमी

उत्तर– (iii) अनसूया।

33. शकुन्तलया सह हस्तिनापुरं का गता?

(i) प्रियंवदा (ii) अनसूया (iii) मेनका (iv) गौतमी

उत्तर– (iv) गौतमी।

34. 'शान्तानुकूल पवनश्च शिवश्च पन्थाः' किसका कथन है?

(i) वशिष्ठ का (ii) काश्यप का (iii) प्रियंवदा का (iv) दुष्यन्त का

उत्तर– उपर्युक्त किसी का नहीं। यह आकाशवाणी है।

35. अभिज्ञानशाकुन्तलस्य कविः (रचयिता) कः अस्ति?

(i) राजशेखरः (ii) भवभूतिः (iii) भट्टनारायणः (iv) कालिदासः

उत्तर– (iv) कालिदासः।

36. शकुन्तलायाः निवसने सज्जते–

(i) वनज्योत्स्ना (ii) पुत्रकृतकः मृगः (iii) लता (iv) हरिणः

उत्तर– (ii) पुत्रकृतकः मृगः।

37. ''न खलु धीमतां कश्चिद् विषयो नाम''–किसका कथन है?

(i) शारद्वत (ii) विदूषक (iii) कण्व (iv) शार्ङ्गरव

उत्तर– (iv) शार्ङ्गरव।

38. गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति इति वचनं आह–
(i) काश्यपः (ii) गौतमी (iii) अनसूया (iv) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (iii) अनसूया।

39. शकुन्तलायाः मातुः नाम आसीत्–
अथवा शकुन्तलायाः जननी कास्ति?
(i) मेनका (ii) सुमित्रा (iii) गार्गी (iv) उर्वशी
उत्तर– (i) मेनका।

40. शकुन्तलायाः दुष्यन्ते स्नेहप्रवृत्तिः अस्ति–
(i) बान्धवकृता (ii) अबान्धवकृता (iii) पूर्वजन्मकृता (iv) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (ii) अबान्धवकृता।

41. वनौकसोऽपि सन्तो लौकिकज्ञा वयम् इति वचनम् आह–
(i) शारद्वतः (ii) काश्यपः (iii) शिष्यः (iv) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (ii) काश्यपः।

42. दुष्यन्तः कः आसीत् ?
(i) राजा (ii) मन्त्री (iii) तपस्वी (iv) कुलपतिः
उत्तर– (i) राजा।

43. 'तात! वन्दे' इति वचनम् आह–
(i) प्रियंवदा (ii) शकुन्तला (iii) अनसूया (iv) गौतमी
उत्तर– (ii) शकुन्तला।

44. 'ओदकान्तं स्निग्धो जनोऽनुगन्तव्यः' इस वाक्य का वक्ता है–
(i) काश्यपः (ii) शार्ङ्गरव (iii) नारद (iv) गौतमी
उत्तर– (ii) शार्ङ्गरव।

45. 'गुर्वपि विरहदुःखमाशाबन्धः साहयति' वाक्य कहा है–
(i) अनसूया ने (ii) प्रियंवदा ने (iii) शकुन्तला ने (iv) नारद ने
उत्तर– (i) अनसूया ने।

46. वैतानास्त्वां वह्नयः पावयन्तु-का वक्ता कौन है?
(i) शार्ङ्गरव (ii) गौतमी (iii) प्रियंवदा (iv) काश्यप
उत्तर– (iv) काश्यप।

47. काश्यपः कः आसीत्?
(i) मन्त्री (ii) तपस्वी (iii) राजा (iv) भृत्यः
उत्तर– (ii) तपस्वी।

48. किं शीलः तपस्विजनः?
(i) सुखशीलः (ii) दुःखशीलः (iii) कर्मशीलः (iv) एतेषु न कश्चिदपि
उत्तर– (ii) दुःखशीलः।

49. प्रियम्वदा कस्याः सखी आसीत् ?
(i) दुष्यन्तस्य (ii) अनसूयायाः (iii) शकुन्तलायाः (iv) गौतम्याः
उत्तर– (iii) शकुन्तलायाः।

●●